अथश्री नवतत्त्व अर्थ विस्तार सा[illegible]

नवतत्वका नाम तथा व्याख्या कहे छे ।

१ जीवतत्त्व । २ अजीवतत्त्व । ३ पुण्यतत्त्व । ४ पाप तत्त्व । ५ आश्रवतत्त्व । निर्जरातत्त्व । ८ बंधतत्त्व । ९ मोक्षतत्त्व ।

व्याख्या–१ जीवतत्त्व केने कहिजे ? जीव सुख दुःख नो कर्त्ता । पुण्य पापनो भोक्ता । चैतन्य लक्षण वंत । तथा अतीत अनागत वर्तमान काले चीरंजीव कहेतां किणी काले विणसे नहीं । पर्यासि प्राणेकरीने सहित । छाया को तावड़े जाय । तावड़ा को छाया आवे । असंख्यात प्रदेश सहित । तेहने जीवतत्त्व कहीजे ॥१॥

२ अजीवतत्त्व केने कहीजे ? सुख दुःख वेदे नहीं । पुण्य पाप भोगवे नहीं । अचेतना लक्षण । रूपी अरूपी तिणने अजीव तत्त्व कहीजे ॥ २ ॥

३ पुण्यतत्त्व किणने कहिजे ? पुण्य की प्रकृति शुभ । पुण्य बांधतां दोहिलो । भोगवतां सोहिलो । सुखे सुखे भोगवे । शुभ जोग सुं बांधे । पुण्य प्राणीने उजला करे । पुण्यका फल मीठा लागे । तिणने पुण्यतत्त्व कहीजे॥३॥

४ पापतत्त्व किणने कहीजे ? पापका फल बांधतां सोहिलां। भोगवतां दोहिलां। दुःखे दुःखे भोगवे। अशुभ योग सुं बंधे। पापका फल कडवा। पाप प्राणीने मैलो करे। तिणने पापतत्त्व कहीजे ॥ ४ ॥

५ आश्रवतत्त्व किणने कहीजे ? जीवरूपीया तलाव में आश्रवरूपीया नाला सुं पुण्य पाप रूपीयो पाणी आवे तिणने आश्रव तत्त्व कहीजे ॥ ५ ॥

६–संवरतत्त्व किणने कहीजे ? जीव रूपीयो तलाव, कर्म रूपीया नाला, पुण्य पाप रूपीयो पाणी तिणने संवर रूपिया पाटीया करने रोके तिणने संवर तत्त्व कहीजे ॥ ६ ॥

७–निर्जरातत्त्व किणने कहीजे ? जीव रूपीयो कपड़ो, कर्म रूपीयो मेल, ज्ञान रूपीयो जल, तप संजम रूपीया साबुसुं धोयने आपणी आत्मा ने उजली करे तिणने निर्जरातत्त्व कहीजे ॥ ७ ॥

८–बंधतत्त्व किणने कहीजे ? जीव आठ कर्मथी बंधाय, जीवने कर्म लोलीभूत हुवे तिणने बंधतत्त्व कहीजे ॥ ८ ॥

९–मोक्षतत्त्व किणने कहीजे ? सर्व कर्मथी मुकाय ते मोक्ष तत्त्व कहीजे॥ ९ ॥

नवतत्त्व में तीन आदरवा योग्य। तीन छांडवा योग्य। तीन जाणवा योग्य। १ जीव, २ अजीव, ३ पुण्य ए तीन जाणवा योग्य। १ पाप, २ आश्रव, ३ बंध, ए तीन छांडवा योग्य। १ संवर, २ निर्जरा, ए तीन आदरवा योग्य।

नवतत्त्व में ४ रूपी । ४ अरूपी । १ मिश्र । १ पुण्य, २ पाप, ३ आश्रव, ४ बंध ए च्यार रूपी । १ जीव, २ संवर, ३ निर्जरा, ४ मोक्ष ए च्यार अरूपी; जीव है तो अरूपी; पीछा पुद्गल करने रूपी। अ-जीव रूपी अरूपी दोनों; अजीवतत्त्व के १४ भेद में ४ भेद तो रूपी हैं और १० भेद अरूपी हैं ।

नवतत्त्व में च्यार जीव ने पांच अजीव । १ जीव, २ संवर, ३ निर्जरा, ४ मोक्ष ए च्यार जीव । १ अजीव, २ पुण्य, ३ पाप, ४ आश्रव, ५ बंध ए पांच अजीव । निश्चय में जीव सो जीव । अजीव सो अ-जीव । सात जीव अजीवकी पर्याय । किण दृष्टांते ? पाणीने माटी भेली कियां गोली बंधे तिम जीव अजीव-रा जोगसुं सातों तत्त्व निपजे ।

१ जीव तत्व ।

जीवतत्त्व तीन प्रकारे करने ओलखीजे १ द्रव्य, २ गुण, ३ पर्याय, द्रव्य गुण आपस में जुदा हुवे नहीं वीछडे नहीं जिहां द्रव्य तिहां गुण । द्रव्य के आश्रये गुण रहे जिम चंद्रमा तिमहीज चंद्रमा की चांदनी । जिम पाणी तिम पाणी की शीतलता । जिम अग्नि तिम अग्नि की गरमाई । जिम जीव द्रव्य तो एक गुण इनको ज्ञानोपयोग, दर्शनोपयोग, जघन्य गुण सुख दुःख को उपजणो आपको सुख दुःख जिहां जावे तिहां संग रहे । अब जीव का पर्याय कहे छे । पर्याय ते किणने कहीजे ? एक पर्याय वणे एक पर्याय विगडे । जिसको पर्याय कहीजे । जिस पर्याय का जघन्य तो एक भेद जीव को उपयोग गुण । जीव

का दो भेद १ त्रस २ स्थावर। जीव का तीन भेद १ स्त्री वेद, २ पुरुष वेद, ३ नपुंसक वेद। जीव का च्यार भेद १ नारकी, २ तिर्यंच, ३ मनुष्य, ४ देवता। जीव का पांच भेद १ एकेन्द्रिय, २ बेंद्रिय, ३ तेंद्रिय, ४ चौरेन्द्रिय, ५ पंचेंद्रिय। जीव का ६ भेद १ पृथ्वीकाय, २ अपकाय, ३ तेउकाय, ४ वाउकाय, ५ वनस्पतिकाय, ६ त्रसकाय। जीव का सात भेद १ नारकी, २ तिर्यंच, ३ तिर्यंचणी, ४ मनुष्य, ५ मनुष्यणी, ६ देवता, ७ देवांगना। जीव का ८ भेद ५ स्थावर ३ विकलेन्द्रिय; अथवा चार गति का अपर्याप्ता च्यार गति का पर्याप्ता ए ८। जीव का ९ भेद १ पृथ्वीकाय, २ अपकाय, ३ तेउकाय, ४ वाउकाय, ५ वनस्पतिकाय ६ बेन्द्रिय, ७ तेंद्रिय, चौरोन्द्रिय ९ पंचेन्द्रिय। जीव का दस भेद पांच जाति का अपर्याप्ता ५ जाति का पर्याप्ता ए १०। जीव का इग्यार भेद दश तो एहीज तथा इग्यारमो अणिंदिया। जीव का १२ भेद ६ कायका अपर्याप्ता तथा पर्याप्ता। जीव का १३ भेद बार तो एहीज एक अकाईयो १३। जीव का १४ भेद सूक्ष्म एकेन्द्रिय का २ भेद अपर्याप्ता, पर्याप्ता, बादर एकेन्द्रिय का २ भेद अपर्याप्ता पर्याप्ता, बेंद्रिय का २ भेद अपर्याप्ता, पर्याप्ता तेंद्रिय का २ भेद अपर्याप्ता पर्याप्ता, चौरेंद्रिय का २ भेद अपर्याप्ता पर्याप्ता, असंज्ञी पंचेंद्रिय का २ भेद अपर्याप्ता, पर्याप्ता, संज्ञी पंचेंद्रिय का २ भेद अपर्याप्ता, पर्याप्ता, जघन्य जीव का १४ भेद कह्या।

जीवका उत्कृष्टा ५६३ भेद कहे । १४ भेद नारकीका, ४८ भेद तिर्यंचका, ३०३ भेद मनुष्यका, १९८ भेद देवताका सर्व मिलके ५६३ भेद हुआ ।

चौदा भेद नारकीका कहेछे ।

सात नारकी का नाम कहेछे । १ धमा, २ वंशा, ३ शिला, ४ अंजणा, ५ रीठा, ६ मघा, ७ माघवई । सात नारकीका गोत्र कहेछे । १ रत्नप्रभा, २ शर्करा प्रभा, ३ वालु प्रभा, ४ पंक प्रभा, ५ धूमप्रभा ६ तमप्रभा, ७ तमस्तमा प्रभा । ए सातका अपर्याप्ता सातका पर्याप्ता एवं १४ भेद हुवा । हिवे रत्नप्रभा नाम क्युं दिया महाराज ! हे गौतम ! तिहां रत्नकांड छे तथा रत्न सरीखी प्रभा पडे छे १ । शर्करा प्रभा नाम क्युं दियो महाराज ! हे गौतम ! सकर पारा सरीखी तीखी छे २ । वालुप्रभा नाम क्युं दिया महाराज ! हे गौतम ! वेलुरेत भड़भुंजारी भाड़सुं अनंतगुणी अधिकी तपेछे ३ । पंकप्रभा नाम क्युं दियो महाराज ! हे गौतम ! लोही मांसरा कादा लाग रह्या छे । धूम प्रभा नाम क्युं दियो महाराज ! हे गौतम ! खारो धुंवो सोमलखारसुं अनंत गुणो अधिको छे । ५ तमप्रभा नाम क्युं दियो महाराज हे गौतम ! मांहे अंधारो छे । ६ तमतमा नाम क्युं दियो महाराज ! हे गौतम ! मांहे महा अंधारो छे ७ ।

हिवे पिंडद्वार कहेछे । पहिली नरकनो एक लाख एसी हजार जोजन पिंड । तेहमें एक हजार जोजन की ठीकरी उपर मुकिये । एक हजार जोजन हेठे मुकिये । विचमें एक लाख ७८ अठंतर हजार जोजन
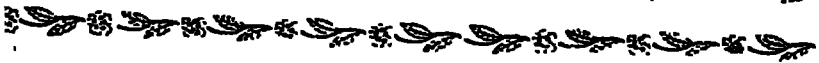
की पोलार छे। तिणमें १३ पाथडाने १२ आंतरां छे। ते मध्ये ३० लाख नरकवासा छे। असंख्याता नारकी ने उपजवानी कुंभी छे। असंख्याता नारकी छे। तेहनी नीचे चार बोल छे। २०००० जोजननो धनोदधि छे। २ असंख्यातो धनवा छे। ३ असंख्यातो तनवा छे। ४ असंख्यातो आकाश छे। तेहनी नीचे दूजी नरक छे।

दूजी नरकनो एक लाख वतीस हजार जोजननो पिंड छे। तेमांहि १ हजार जोजन की ठीकरी उपर मुकिये। १ हजार जोजन की ठीकरी हेठे मुकिये। एक लाख तीस हजार जोजन विचमें पोलार छे ते मांहि ११ पाथडा छे १० आंतरा छे। ते मध्ये २५ लाख नरकावासा छै। असंख्याता नारकी छै। असंख्याता नारकीने उपजवानी कुंभी छे। तेहनी नीचे उपर कह्या ४ बोल छे। तेहनी नीचे त्रीजी नरक छे।

त्रीजी नरकनो एक लाख २८ हजार जोजन नो पिंड छे। ते मांहिला एक हजार जोजन उपर मुकिये। एक हजार हेठे मुकिये। एक लाख २६ हजार जोजन विचमें पोलार छे। ते मांहि ९ पाथड़ा ८ आंतरां छे। ते मध्ये १५ लाख नरकावासा छे। असंख्याता नारकी छे। असंख्याता नारकीने उपजवानी कुंभी छे। ते नीचे ४ बोल छे। तेहनी नीचे चोथी नरक छे।

चोथी नरकनो पिंड १ लाख २० हजार जोजननो छे। ते मांहि १ हजार जोजन हेठे मुकिये। एक हजार जोजन उपरे मुकिये। विचमें १ लाख १८ हजार जोजननी पोलार छे। ते मांहि ७ पाथडा ने ६

आंतरा छे। ते मध्ये १० लाख नरकावासा छे। असंख्याता नारकी छे। असंख्याती नारकीने उपजवानी कुंमी छे। ते नीचे ४ वोल छे। तेहनी नीचे पांचमी नरक छे।

पांचमी नरकनो पिंड १ लाख १८ हजार जोजननो छे। ते मांहि एक हजार जोजन उपर मुकिये। एक हजार जोजन हेठे मुकिये। विचमें एक लाख १६ हजार जोजननी पोलार छे। ते मांहि ५ पाथडा ने ४ आंतरा छे। ते मध्ये त्रण लाख नरकावासा छे। असंख्याता नारकी छे। असंख्याता नारकीने उपजवानी कुंमीओ छे। ते नीचे ४ वोल छे। तेहनी नीचे छठी नरक छे।

छठी नरकनो १ लाख १६ हजार जोजननो पिंड छे। ते मांहिं १ हजार जोजन उपर मुकिये। १ हजार जोजन हेठे मुकिये। विचं में १ लाखने १४ हजार जोजन पोलार छे। ते मांहिं ३ पाथडाने २ आंतरा छे। ते मध्ये एक लाख में पांच कम नरकावासा छे। असंख्याता नारकी छे। असंख्याता नारकीने उपजवानी कुंभी छे। ते नीचे ४ वोल छे। तेहनी नीचे सातमी नरक छे।

सातमी नरकनो पिंड एक लाख आठ हजार जोजन छे तेमांहिं ५२॥ हजार जोजन उपर मुकिये। ५२॥ हजार जोजन हेठे मुकिये। ३ हजार जोजन विच में पोलार छे। ते मांहिं १ पाथडो छे। आंतरो नथी ते मध्ये ५ नरकावासा छे। असंख्याता नारकी छे। असंख्याता नारकीने उपजवानी कुंभी छे। ते नीचे उपर कह्या च्यार बोल छे। तेहनी नीचे अनंतो अलोक छे। इति पिंडद्वार सम्पूर्ण।

५ ७ नरकना अपर्याप्ता तथा ७ नरकना पर्याप्ता एवं १४ भेद हुआ ।

॥ देवता का १९८ भेद कहे छे ॥

९९ जातका देवताका नाम कहे छें । दश जातका भवनपति देवता ते कहे छे । १ असुर कुमार, २ नागकुमार, ३ सुवर्णकुमार, ४ विज्जुकुमार, ५ अग्निकुमार, ६ द्वीपकुमार, ७ उदधिकुमार, ८ दिशाकुमार, ९ पवनकुमार, १० स्थणितकुमार ।

१५ परमाधामी देवताका नाम कहे छे । १ अंबे, २ अंबरिसे, ३ शामे, ४ सबले, ५ रूद्दे, ६ विरूद्दे, ७ काले, ८ महाकाले, ९ असीपत्ते, १० धनुपत्ते, ११ कूंभे, १२ वालुए, १३ वेतरणीए, १४ खरखरे, १५ महाघोसे।

१६ वाणव्यंतरका नाम कहे छे । १ पिशाच, २ भूत, ३ जक्ष, ४ राक्षस, ५ किन्नर, ६ किंपुरिस, ७ महोरग, ८ गंधर्व, ९ आणपन्नी, १० पाणपन्नी, ११ ईसीवाई, १२भूइवाई, १३ कंदीय, १४ महाकंदीय, १५ कोहंड, १६ पयंग देव ।

तीन किल्विषी देवताका नाम कहे छे । १ तीन पलिया, २ तीन सागरया, ३ तेर सागरया । तीनं पलिया कठे रेवे महाराज ! हे गौतम ! ज्योतिषी के उपर और पेला दुजा देवलोक के नीचे । तीन सागर की स्थिति

का किल्विषी कठे रेवे महाराज। हे गौतम! पेला दुजा देवलोक के उपर। त्रीजा चौथा देवलोक के नीचे। तेरे सागर की स्थिति का किल्विषी कठे रेवे महाराज? हे गौतम! पांचवा देवलोक के उपर छठा के नीचे।

हिवे वैमानिक कहे छे। बारा देवलोकाका नाम कहे छे। १ सुधर्म देवलोक, २ ईशान देवलोक, ३ सनत कुमार देवलोक, ४ माहेंद्र दे०, ५ ब्रह्मलोक, ६ लंतक दे०, ७ महाशुक्र दे० ८ सहस्मार दे०, ९ आणत दे०, १० पाणत दे०, ११ आरण दे०, १२ अच्युत दे०।

१ पहेला देवलोक का ३२ लाख विमान। २ दुजा देवलोक का २८ लाख विमान। ३ त्रीजा देवलोक का १२ लाख विमान। ४ चोथा देवलोक का ८ लाख विमान। ५ पांचवां देवलोक का ४लाख विमान। ६ छठा देवलोक का ५० हजार विमान। ७ सातमा का ४० हजार विमान। ८ आठवां का ६ हजार विमान। ९। १० नवमा तथा दशमा का ४०० विमान। ११। १२ इग्यारमा तथा बारमा का ३०० विमान। एवं १२ देवलोक।

नवग्रीवेयक की तीन त्रिक। पहेली त्रिक में १११ विमान। विचली त्रिक में १०७ विमान। उपली त्रिक में १०० विमान। पांच अनुत्तर विमान का ५ विमान। सर्व उंचा लोकका विमान ८४९७०२३ चोरासी लाख सताणु हजार तेवीस छे।

१ पेले देवलोके मृगको चिह्न। २ दूजे देवलोके भेसाको चिह्न। ३ तीजे देवलोके सूरको चिह्न। ४

चोथे देवलोके सिंह को चिह्न। ५ पांचमें देवलोके वकराको चिह्न। ६ छठे देवलोके देडकाको चिह्न। ७ सातमें देवलोके घोडाको चिह्न। ८ आठमे देवलोके हाथीको चिह्न। ९ नवमे देवलोके सरपको चिह्न। १० दसमे देवलोके गेंडाको चिह्न। ११ इग्यारमे वृषभको चिह्न। १२ वारमे देवलोके वर्धमान साथीयाको चिह्न। १ पहले देवलोके ८४ हजार सामानिक। २ दूजे देवलोक ८० हजार सामानिक। ३ तीजे देवलोक में ७२ हजार सामानिक। ४ चोथे देवलोक में ७० हजार सामानिक। ५ पांचमे देवलोक में ६० हजार सामानिक। ६ छठे देवलोक में ५० हजार सामानिक। ७ सातमे देवलोक में ४० हजार सामानिक। ८ आठमे देवलोक में ३० हजार सामानिक।९।१० नवमें दशमे देवलोक में २० हजार सामानिक।११।१२ इग्यारमे तथा वारमे देवलोक में १० हजार सामानिक। आत्मरक्षक सुं चोगुणा आप आपका सुं के देणा। पेले दूजे देवलोक में काया सेवी। तीजे चोथे देवलोक में स्पर्श सेवी। पांचमे छठे देवलोक में रूप। सातमे आठमे देवलोक में शब्द। नवमे, दशमे, इग्यारमे, वारमे मन। नवग्रीवेयक पांच अनुत्तर विमान में अप्प विषया अणंत सुहा।

पेले देवलोके स्थिति जघन्य १ पल्प। उत्कृष्टी २ सागरकी। तिणमें देवी दोय परिग्रहिता ने अपरिग्रहिता। तिणमें परिग्रहितानो आउखो जघन्य १ पल्य उत्कृष्टा ७ पल्य। अपरिगृहिता जघन्य १ पल्प। उत्कृष्ट ५० पल्प। दूजे देवलोक में जघन्य १ पल्प भाभेरो उत्कृ० २ सागर भाभेरो। परिग्रहिता दे-

वीको जघन्य १ पल्य झाझेरो उत्कृष्टो ६ पल्य। अपरिग्रहिता देवीको जघन्य १ पल्य उत्कृष्टो ५५ पल्यं। तीजा देवलोकमें ज० २ सागर, उत्कृष्टो ७ सागर। चोथा देवलोकमें जघन्य २ सागर झाझेरो उत्कृष्टो ७ सागर झाझेरो। पांचमा देवलोक में ज० ७ सागर उ० १० सागर। छठा देवलोके ज० १० सागर उ० १४ सागर। सातमा देव० ज० १४ सागर उ० १७ सागर। आठमा देव० ज० १७ उ० १८ सागर। नवमा देवलोके ज० १८ उ० १९। दशमा दे० ज० १९ उ० २०। इग्यारमा दे० ज० २० उ० २१। बारमा दे० ज० २१ उ० २२। पेली ग्रीवेयके ज० २२ उ० २३। दूजी ग्रीवेयके ज० २३ उ० २४। ईम एक एक वधारतां नवमी ग्रीवेयके ज० ३० उ० ३१ सागर। च्यार अनुत्तर विमान में ज० ३१ सागर उत्कृष्टी ३३ सागर। सर्वार्थसिद्ध में जघन्य उत्कृष्टी ३३ सागर की स्थिति जाणवी।

हिवे नव लोकांतिक देवताका नाम कहे छे। १ सारस्वत, २ आदित्य, ३ विह्नि, ४ वरूण ५, गर्दतोया, ६ तोपिया, ७ अव्याबाधा, ८ अगिच्चा, ९ रिष्ठा। हिवे नव ग्रीवेयकका नाम कहे छे। १ भद्दे, २ सुभद्दे, ३ सुजाए, ४ सुमाणसे, ५ सुदंसणे, ६ पियदंसणे, ७ आमोहे ८ सुपडिबुद्धे, ९ जसोधरे,। हिवे पांच अणुत्तर विमानका नाम कहे छे। १ विजय, २ विजयंत, ३ जयंत, ४ अपराजित, ५ सर्वार्थसिद्ध। एवं ९९ जातका देवता कह्या। तेहना अपर्याप्ता ने पर्याप्ता सर्व १९८ तथा १४ नारकी का एवं २१२ भेद हुआ।

॥ हवे ३०३ भेद मनुष्य का कहे छे ॥

१५ कर्मभूमि, ३० अकर्मभूमि, ५६ अंतरद्वीपा। ए १०१ चेत्र का गर्भज मनुष्य का अपर्याप्ता पर्याप्ता मिलकर २०२ भेद तथा १०१ चेत्र का समूर्च्छिम मनुष्य का अपर्याप्ता। सर्व मिलीने ३०३ भेद हुआ।

पंदर कर्मभूमि मनुष्यका ठिकाणां कहे छे। ५ भरत, ५ ईरव्रत, ५ महाविदेह। तिणमें एक भरत, एक ईरव्रत, एक महाविदेह ए त्रण चेत्र जंबुद्वीप में। २ भरत, २ ईरव्रत, २ महाविदेह ए ६ चेत्र धातकी खंड में छे। २ भरत, २ ईरव्रत, २ महाविदेह ए छ चेत्र अर्धपुष्कर द्वीप में। एवं १५ चेत्र कर्मभूमि का। ते कर्मभूमि किणने कहिजे। जठे असी कहतां तलवारादिक शस्त्र करने कमाई करे। मसी कहतां लिखणुं करने कमाई करे। कसी कहतां कृषण (खेती) से निर्वाह करे। जठे राजा है, राणी है, राजा राणी की आण है, साधु है, साध्वी है, साधु साध्वी को व्यवहार है, श्रावक है, श्राविका है, श्रावक श्राविका को व्यवहार है। जठे खेत है, सेत है, अत्रखेत है, खेत कहतां खेड्यां धान्य नीपजे। सेत कहतां सींच्या धान्य नीपजे। अत्रखेत कहतां अडक धान्य नीपजे। खेत का ४ भेद। सींठोक० जुवारादिक, उवी कहेतां डांगर गेहुं आदि। डोडा कहतां तीजारा को आदि देईने। फलीक० मोठ मुंगरी आदि देईने अनेक जातकी। जठे चोवीश तीर्थंकर छे। जठे २० विहरमान छे। गणधर छे, आचारज छे, उपाध्याय छे, १२ चक्रवर्ती छे, ९ वलदेव छे, ९ वासुदेव छे, ९ प्रतिवासुदेव छे, जठे छतीस कारखाना करके पट भरे, ज्याने कर्मभूमि कहीजे.

तीस अकर्म भूमि किणने कहीजे। ५ देवकुरू, ५ उत्तर कुरू, ५ हरिवास, ५ रम्यकवास, ५ हेमवय, ५ हिरण्यवय। तिणमें जंबुद्वीप में एक एक करने छ क्षेत्र छे। धातकी खंड में दोय दोय करता १२ क्षेत्र छे। इमहीज १२ क्षेत्र पुष्करार्ध द्वीप में छे। एवं ३० क्षेत्र। जठे राजा नहीं, राणी नहीं, राजा राणी की आण नहीं, साधु नहीं, साध्वी नहीं, साधु साध्वी को व्यवहार नहीं, श्रावक नहीं, श्राविका नहीं, श्रावक श्राविका को व्यवहार नहीं, कवारा कवारी परणीजे नहीं, खेत नहीं सेत नहीं अवखेत है, सीगे है, डांडा है फली है ववी है, जठे २४ तीर्थंकर २० विहरमान, गणधर, १२ चक्रवर्ती, ९ बलदेव, ९ वासुदेव, ९ प्रतिवासुदेव, इतरा बोल करने रहित होय, चीज जुगलीया ने काम आवे नहीं, कर्तव्य करीने पेट भरे नहीं तिणने ३० अकर्म भूमि का क्षेत्र कहिजे।

हवे ५६ अंतरद्वीपा कहेछे। जंबुद्वीप के भरत क्षेत्र की मर्यादा को करण हार चुलहिमवंत नामे पर्वत छे ते सोना जेसो पीलो छे। सो जोजन को उंचो छे। सो गाउनो उंडो छे। एक हजार बावन जोजन ने बार कलानो चोडो छे। चोवीस हजार नवसो बत्रीस जोजन को लांबो छे। तेहने पूर्व पश्चिम के छेडे दो दो दाढा नीकली छे। एक एक डाढा उपरं सात २ अंतरद्वीपा छे। ७ चोक २८। इमहीज ईरवृत क्षेत्र की मर्यादा को करणहार शिखरी पर्वत छे। ते चुलहिमवंत पर्वत सरीखो जाणवो। तिहां २८ अंतरद्वीपा है। एवं सर्व मिलीने ५६ अंतरद्वीपा छे। तेनुं मान कहे छे। लवण समुद्र में ३०० जोजन आधो जाईज्ये जठे

३०० जोजन को लांबो चोड़ो पहलो अंतरद्वीपो आवे। तिहां सुं ४०० जोजन जाईये जठे ४०० जोजन को लांबो चौड़ो दूजो द्वीपो ईमहीज एक एक वधारतां ९०० जोजन जाईये जठे ९०० जोजन को नवमो अंतरद्वीपो। एवं ७ चोक २८ द्वीपा चुलहिमवंत पर्वत की सुध छे। एतला सीखरी पर्वतकी सुध छे एवं ५६ अंतरद्वीपा हुवा।

समूर्च्छिम मनुष्य १०१ क्षेत्र में उपजे। तेहनी विगत कहे छे। १ उच्चारेसुवा कहतां वडीनीत में उपजे २ पासवणेसुवा कहतां लघुनीत में उपजे। ३ खेलेसुवा कहतां खखार मांही उपजे। ४ सींघाणे सुवा कहतां नाकका मेल में उपजे। ४ वंतेसुवा कहतां वमन करे तेहमें उपजे। ५ पीते सुवा कहतां पित पड़े तेहमें उपजे। ६ सोणिए सुवा कहतां रुधिर में उपजे। ७ पुइए सुवा कहतां रसामें राधमें उपजे। ८ सुक्के सुवा कहतां वीर्यमें उपजे। ९ सुक्क पोग्गल परिसाडीए सुवा कहतां वीर्यादिकरा पुद्गल आला होवे तिणमें उपजे। १० स्त्री पुरुष संजोगे सुवा स्त्री पुरुष के संजोग में उपजे। ११ निगयजीव क्लेवर में अंतमूहूर्त में जीव उपजे। १२ नगर निद्धमणे सुवा नगरका नारंदा में जीव उपजे। १३ सव्वे सुचेव असुई ठाणे सुवा कहतां सर्व अशुचि ठिकाणा में जीव उपजे।

हिवे सर्व घडो कहे छे। १५ कर्मभूमि, ३० अकर्मभूमि ५६ अंतरद्वीपा एवं १०१ अपर्याप्ता १०१ पर्याप्ता, १०१ समूर्च्छिम एवं सर्व मिली मनुष्य का ३०३ भेद जाणवा।

तिर्यंच का ४८ भेद कहे छे।

पृथ्वीकायरा ४ भेद। १ सूक्ष्म २ बादर तेहना अपर्याप्ता ने पर्याप्ता मिली चार हुआ। सूक्ष्म देखे केवली ने बादर देखे छद्मस्थ। चार पर्याप्ति पूरी बांधे तो पर्याप्तो। च्यार पर्याप्ति हीणी बांधे सो अपर्याप्तो कहीजे। वर्ण उनको पीलो। स्वभाव उनको कठण। संठाण उनको चंद्रमा अथवा मसुर की दालके आकार। अपकायरा ४ भेद सूक्ष्म ने बादर। अपर्याप्तो ने पर्याप्तो। सूक्ष्म देखे केवली बादर देखे छद्मस्थ। चार प्रजाहीणी बांधे सो अपर्याप्तो। च्यार प्रजा पूरी बांधे तो पर्याप्तो। अपकाय को वरण सफेद स्वभाव उणको ढीलो। संठाण उणको पाणी का बुदबुदा आकार। तेउकाय का ४ भेद सूक्ष्म ने बादर अपर्याप्तो पर्याप्तो। सूक्ष्मने देखे केवली। बादरने देखे छद्मस्थ। च्यार प्रजा उणी बांधे जिणने अपर्याप्तो। च्यार पूरी बांधे तो पर्याप्तो तेउकाय का वर्ण लाल। स्वभाव उणको उष्ण, संठाण सुईरा भारा आकारे। वाउकाय का ४ भेद। सूक्ष्म ने बादर अपर्याप्ता ने पर्याप्ता। सूक्ष्म देखे केवली। बादर देखे छद्मस्थ। च्यार प्रजा उणी बांधे ते अपर्याप्तो। चारे पूरी बांधे तो पर्याप्तो। वाउकाय को वर्ण नीलो। स्वभाव उणको चलण। संठाण उणको ध्वजापताका ने आकार। वनस्पतिकाय का ६ भेद। १ सूक्ष्म. २ प्रत्येक, ३ साधारण ए तीन का अपर्याप्ता। ए तीन का पर्याप्ता एवं ६ सूक्ष्म देखे केवली। बादर देखे छद्मस्थ। च्यार प्रजा पूरी बांधे ते पर्याप्तो। उणी बांधे ते अपर्याप्तो कहीजे। वर्ण उणको कालो।

स्वभाव उणको नाना प्रकार को संठाण उसको नाना प्रकार को। सूक्ष्म वनस्पति में एक शरीर में अनंता जीव १। साधारण में अनंता जीव २ प्रत्येक में संख्याता असंख्याता। प्रत्येक कुणने कहे छे। आंबा नीबु फल आद देईने ए प्रत्येक वनस्पति का मूल में, कंद में, खंद में, छाल में, साखा में, पड साखा में असंख्याता जीव। पान में एक अथवा अनेक जीव। फूल में अनेक जीव। फल में जितरा बीज उतरा जीव। सींगोडा में २ जीव। इति प्रत्येक वनस्पति भेद। हवे साधारण वनस्पति का भेद कहे छे। कंद, मूल, अंकुरा, आद देईने साधारण वनस्पति तिणमें अनंता जीव। हिवे बेइन्द्रिय का २ भेदते कहे छे। अपर्याप्ता ने पर्याप्ता। संख, कोडा, गींडोला, जोख आदि देईने अनेक जात का जीव बेइन्द्रिय कहीजे। हिवे तेइन्द्रिय का २ भेद कहे छे। अपर्याप्ता ने पर्याप्ता। तेइन्द्रिय कुण कानसलाया, मांकड, जु, लीख, कीड़ी, मंकोडी, आदि देईने अनेक जाणवा थांके इन्द्रिया तीन स्पर्शेन्द्रिय, रसेंद्रिय, घाणेंद्रिय। चोरिन्द्रिय का २ भेद ते कहे छे। अपर्याप्ता ने पर्याप्तो। चोइन्द्रिय कुण। बींछु, ढींकण, भंवरा, भंवरी, माखी, मच्छर, तीड आदि देईने चउरिन्द्रिय का भेद जाणवा। तिर्यंच पंचेन्द्रिय का २० भेद। १ जलचर—मच्छ, कच्छादिक ते जलचर जाणवा। २ स्थलचर—सिंह, व्याघ्र वगेरा। १ एक खुरा, २ दो खुरा, ३ गंडीपया, ४ सणप-या एवं ४ भेद स्थलचर पंचेन्द्रियना जाणवा। खेचर ते कुण आकाश में उडे ते। हंस बुगला प्रमुख ते रोमपंखी चीडी, कबूतर प्रमुख। चर्मपंखी ते कुण ? बागल, चमचड प्रमुख जाणवा २। विततपंखी किणने कहिजे ? पांख

समुग पंखी किणने काहज ?
पसारीने उडे तिणने विततपंखी कहिजें ३ । समुग पंखी किणने काहज । इति खेचर पंचेन्द्रिय
तिणने समुग पंखी कहिजे । ये दोय जातका पंखी अढाईद्वीप के बारे जाणवा । भुजपर ते
जाणवा । हिवे उरपर ते कुण ? हीया सुं चाले । कालमदार सरपादिक ते उरपर जाणवा । ए पांच असंज्ञी पंचेन्द्रिय ए
कुण ? भुजा करीने चाले ते गोह नोलीयादिक भुजपर पंचेंद्रिय जाणवा । अथ घड़ो
पांच संज्ञी पंचेन्द्रिय एवं १० अपर्याप्ता १० पर्याप्ता एवं २० भेद तिर्यंच पंचेन्द्रियका जाणवा । एवं ४८ भेद तिर्यंच
२२ भेद तो एकेन्द्रियका । ३ विकलेन्द्रियका ६ भेद । तिर्यंच पंचेन्द्रियका २० भेद । २०३ मनुष्य का भेद ।
का जाणवा । सर्व घडो कहे छे । १४ नारकी का भेद । १९८ देवता का भेद । जीवतत्त्वका ते कठे कठे पावे ते कहे छे ।
४८ तिर्यंच का भेद । एवं सर्व मिलीने ५६३ भेद

भरतक्षेत्र मांहि जीवका ५१ भेद । ४८ तिर्यंच १ भरतक्षेत्र कर्मभूमि का अपर्याप्ता, पर्याप्ता, समूर्च्छिम एवं ५१ हुआ.

जंबुद्वीप मेंजीव का भेद ७५ छे ते किम ? ४८ तिर्यंच का १ भरत, १ ईरवृत, १ महाविदेह, १ हेम-वय, १ हिरणवय, १ हरिवास, १ रम्यकवास, १ देवकुरू, १ उत्तरकुरू ए नव तीया २७ हुआ । एवं ७५ भेद हुआ ।

लवण समुद्र में जीव का भेद २१६ छे ते किम ? ४८ तिर्यंच का । ५६ अंतरद्वीपा का अपर्याप्ता, पर्याप्ता, समूर्च्छिम छप्पन तीया १६८ । एवं २१६ हुआ ।

धातकी खंड में जीव का भेद १०२ ते किम ? ४८ तिर्यंच का । २ भरत, २ ईरवृत, २ महाविदेह, २ हेमवय, २ हिरणवय, २ हरिवास, २ रम्यकवास, २ देवकुरू, २ उत्तरकुरू, एवं १८ का अपर्याप्ता पर्याप्ता समूर्च्छिम अठारे तीया ५४ हुआ एवं १०२ भेद हुआ ।

कालोदधि में जीव का भेद ४८ ते किम ? तिर्यंच का ४८ भेद पावे ।

अर्धपुष्कर में जीव का भेद धातकी खंड बराबर १०२ जाणवा ।

समुच्चय अढीद्वीप में जीव का भेद ३५१ ते किम ? १०१ अपर्याप्ता मनुष्य । १०१ पर्याप्ता मनुष्य । १०१ समूर्च्छिम मनुष्य एवं ३०३ मनुष्य । ४८ तिर्यंच एवं ३५१ भेद हुआ ।

अढीद्वीप बहार जीव का भेद ११८ ते किम ? ४६ तिर्यंच का बादर तेउकाय को अपर्याप्तो पर्याप्तो ए दोय भेद टल्या । १६ वाणव्यंतर, १० जंभका, १० ज्योतिषी ए ३६ का अपर्याप्ता पर्याप्ता मिलकर ७२ एवं ११८ भेद हुआ ।

नीचालोक में जीव का भेद ११५ ते किम ? ७ नारकी, १५ परमाधामी, १० भवनपति, एवं ३२ अपर्याप्ता ३२ पर्याप्ता एवं ६४ । तिर्यंच का ४८ भेद । मनुष्य का ३ भेद । एवं ११५ भेद हुआ ।

त्रीछालोक में जीव का भेद ४२३ ते किम ? ३०३ मनुष्य, ४८ तिर्यंच एवं ३५१ हुआ । तथा १६ वाणव्यंतर, १० जंभकां, १० ज्योतिषी एवं ३६ अपर्याप्ता, ३६ पर्याप्ता । एवं ७२ हुआ । सर्व मिलकर ४२३ भेद हुआ ।

ऊंचा लोक में जीव का भेद १२२ ते किम ? ४६ तिर्यंच का (बादर तेउकाय को अपर्याप्तो पर्याप्तो टल्यो) ३ किल्विषी, १२ देवलोक ६ लोकांतिक. ६ ग्रीवेयक ५ अनुतर विमान एवं ३८ अपर्याप्ता, ३८ पर्याप्ता । एवं ७६ । सर्व मिलके १२२ हुआ ।

मुक्ति शिला उपर जीव का भेद १२ ते किम ? पांच स्थावर ते सूक्ष्म अपर्याप्ता पर्याप्ता एवं १० तथा बादर वाउकाय को अपर्याप्तो, पर्याप्तो एवं १२ भेद हुआ ।

सातमी नरक के तले एहिज १२ भेद तथा स्वयंभूरमण समुद्र के अंत एहिज १२ भेद जाणवा । आकाश का थेला में सर्व ५६३ भेद होवे ।

मुठीमें जीवका भेद कितना पावे ? १४ मांहिला पुछे तो जघन्य ४ भेद लाभे एकेंद्रिय का । १ सूक्ष्म २ बादर तेहना अपर्याप्ता, पर्याप्ता एवं ४ । ने उत्कृष्टा १४ लाधे ते किम ! जीव आउखो पुरोकरे छे तिणको तांतो वह रह्यो छे ।

हिवे जीवका लक्षण कहे छे १ जीवमांहे ज्ञान लाभे । २ जीव मांहे दर्शन लाभे । ३ जीवमांहे चारित्र लाभे । ४ जीव मांहे तप लाभे । ५ जीव मांहे वीर्य लाभे । ६ जीवमांहे उपयोग लाभे । ए जीव का ६ लक्षण कह्यां !

हिवे ६ पर्याप्ति कहे छे । एकेंद्रिय में ४ पर्याप्ति ते कुण ? १ आहार पर्याप्ति, २ शरीर पर्याप्ति, ३ इन्द्रिय

पर्याप्ति, ४ श्वासाश्वास पर्याप्ति । तीन विकलेन्द्रिय बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय चउरिन्द्रिय ए ३ । मे पांच पर्याप्ति । च्यारतो एहीज, पांचमो वचन वध्यो । असंज्ञी पंचेन्द्रिय में पांच पर्याप्ति ते पीण वचन वध्यो । संज्ञी पंचेन्द्रिय में ६ पर्याप्ति, पांच तेहीज, छट्ठो मन वध्यो.

हिवे १० प्राण कहे छे, एकेन्द्रिय ने ४ प्राण १ स्पर्शेन्द्रिय, २ कायबल, ३ श्वासो श्वास आउखो. बेइन्द्रियने ६ प्राण १ स्पर्शेन्द्रिय, २ रसेन्द्रिय, ३ कायबल, ४ वचनबल, ५ श्वासो श्वास, ६ आउखो, तेइन्द्रियने ७ प्राण, १ स्पर्शेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, ४ कायबल ५ वचनबल, ६ श्वासो श्वास. ७ आउखो । चौरेंद्रियने ८ प्राण, १ स्पर्शेन्द्रिय, २ रसेन्द्रिय. ३ घ्राणेन्द्रिय, ४ चक्षुरिंद्रिय, ५ कायबल, ६ वचनबल, ७ श्वासो श्वास, ८ आउखो । असंज्ञी पंचेन्द्रियने, ९ प्राण; १ स्पर्शेन्द्रिय, २ रसेंद्रिय, ३ घ्राणेन्द्रिय ४ चक्षुरिन्द्रिय ५ श्रोतेन्द्रिय, ६ कायबल, ७ वचनबल श्वासो श्वास, ९ आउखो । संज्ञी पंचेन्द्रियने १० प्राण, १ स्पर्शेन्द्रिय, २ रसेन्द्रिय, ३ घ्राणेन्द्रिय, ४ चक्षुरिन्द्रिय ५ श्रोतेन्द्रिय ६ कायबल, ७ वचनबल ८ मनबल, ९ श्वासो श्वास, १० आउखो ।

अथ छ आरा को विस्तार ।

पहलो सुखमा सुखम आरो ४ कोडा कोडी सागर को । सागर किणने कहिजे ? एक कूवो ४ कोश को लांबो ४ कोश चोड़ो ४ कोश ऊंडो, जिण में देवकुरू उत्तरकुरू क्षेत्र का ७ दिनका जुगलिया का केश

४०९६ चारहजार छनु केशांको भरत इरवृत को १ केश होवे ते जुगलिया का १ केश का असंख्याता २ खंडवा कीजे कूवो काठो भरीजे। ते उपर गंगा सिंधु नदी वहे तो बुंद मात्र भेदे नहीं। दावानल लागे तो बले नहीं। चक्रवर्ती की सेना सुं जमस खाय नहीं। पुष्करावर्त मेह वरसे तो भींजे नहीं। अति प्रतिकूल वायरो वाजे तो रज उडे नहीं। एहवो काठो कूवो भरीजे। सो सो वरस एक २ रज काडिजे, कूवो खाली हुवे जिणने पल्योपम कहीजे। ईसी १० कोडा कोड पल्प जिणने सागरोपम कहीजे ईस्ये ४ कोडा कोड को पेलो आरो। तिणमें ३ गाऊ को देहमान। ३ पल्प को आउखो। माता पिता को छ महिना को आउखो थाकतां रहे तिवारे एक जोड़लो जन्मे। जोड़ला को २५६ तो पांसली। गुणपचास दिन तांई माता प्रतिपालना करे। भूख लागे अठमभक्त आहार करे तुवर की दाल प्रमाणे तथा अवश्र प्रमाणे। वापने छींक आवे। माता ने उवासी आवे दोनों आउखो पुरो करीने अठासुं देवता में उतनेही आउखे जायने उपजे। धणी को वियोग धणीयाणी देखे नहीं। धणीयाणी को वियोग धणी देखे नहीं। पीछे एहीज बेन भाई ने एहीज धणी धणियाणी। १० जात का कल्प वृक्ष मनोवंछित पूरे। पेलो कल्पवृक्ष अनेक जात का सुगंधादिक पाणी को दातार १। दुजो कल्पवृक्ष अनेक जातका भाजन को दातार २। त्रीजो कल्पवृक्ष अनेक जातका नाटक को दातार ३। चोथो कल्पवृक्ष अंधारा में सूरज जीस्या चांदणा को दातार ४। पांचमो कल्पवृक्ष दीपकका चांदणा को दातार ५। छट्ठो कल्पवृक्ष अनेक प्रकारका पुष्प फुलारो दातार।

सातमा कल्पवृक्ष अनेक जात का आहार १८ भोजन ३६ सालणा को दातार ७ । आठमो कल्पवृक्ष अनेक जात का आभूषण को दातार ८ । नवमो कल्पवृक्ष अनेक प्रकार की महेलायता (हवेलीयां) को दातार ९ । दशमो कल्पवृक्ष अनेक जात का वस्त्र को दातार १० । गाथाः—१ पायण, २ भायण, ३ पेछण. ४ रविपह, ५ दीवपहे, ६ कुसुम. ७ आहारो, ८ भूसण, ६ गिह. १० पथाणिये कप्पदुम्मा दसविहा दंति १ . एक मेह वरसे तिवारे दस हजार वरस तांई धरती को छेह जावे नहीं । धरती को फरस किस्यो ? जिस्यो आकतुल तथा इंणसुं पीण अधिको स्पर्श जाणवो । रस किस्योक छे ? कालपी मीसरी सरीखो इति प्रथम आरो समत्तं ॥ १ ॥

दूजो आरो सुखम ईसी नामे ते तीन कोडा कोड सागर को । २ गाउ को देहीमान । २ पल्य को आउखो. माता पिता को छे महिनाको आउखो थाकता रेवे तिवारे मातानें एक जोडलो जन्मे. जोडलाने १२८ पांसल्यां हुवे. ६४ दिन माता प्रतिपालना करे. भूख लागे तिवारे छठ भक्त आहार करे वोरा प्रमाणे तथा अवध प्रमाणे. बापने छीक आवे. माता ने उवासी आवे. दोनुं आउखो पूरो करीने उतनेही आउखे देवता में उपजे. धणी को विजोग धणीयाणी देखे नहीं. १० जात का कल्पवृक्ष मनवांछित पुरे. एक मेह वरसे तिवारे एक हजार वरस तांई पृथ्वी को तेह जाय नहीं. धरती को स्पर्श किस्योक छे ? रेसम सरीखो धरती को रस किस्योक छे ? सादी मिसरी सरीखो इति दूजो आरो समत्तं.

त्रीजोआरो सुखमादुखम नामे २ कोडा कोड सागर को. एक गाउ को देहमान. एक पल्य को आउखो. माता पिता ने छ महिना थाकतां रेवे तिवारे जोडलो जनमे. ते जोडला कें ६४ पासल्यां. ७९ दिनतांई माता प्रतिपालना करे। भूख लागे तिवारे चोथ भक्त आहार करे आंवला प्रमाणे। बाप ने छींक आवे। माता ने उवासी आवे। दोनुं आउखो पुरो करी ने उतनो ही आउखो देवता में पावे। धणी को विजोग धणी थाणी देखे नहीं। धणीयाणी को विजोग धणी देखे नहीं। एक मेह वरसे तिवारे १०० वरस तांई धरती को तेह जावे नहीं। धरती को स्पर्श किस्यां छ रूई का पोल सरीखो। तीण तीजा आरा का तीन भाग कीजे। तीजा भाग में १५ कुलगर हुआ। पेला ५ कुलगर के वारे हकार दंड। दूजा ५ कुलगर के वारे मकार दंड। तीजा ५ कुलगर के वारे धिकार दंड एवं १५ हुआ। तिण आरा में चोरासी लाख पूर्व तीन वरस ८॥ महिना थाकतां रहे तिवारे माता मरुदेवी की कुख ने विषे श्री ऋषभदेवजी जन्म्या। ६४ इन्द्र उत्सव कियो। कल्पवृक्ष थाक्या। इन्द्र का हुकमसुं वैश्रमण महाराज वनिता वसाय दीनी। तिण महापुरुष को ८४ लाख पूर्व को आउखो। इवे तीजा आरा का ३ वरस ८॥ महिना थाकता रह्या तिवारे श्री ऋषभदेव स्वामी मुक्ति पधार्या। इति त्रीजो आरो समत्तं।

चोथो आरो दुखम सुखमा ते एक कोडाकोडी सागर में बेयालीस हजार वरस उणो। तिणमें लागते आरे तो १ क्रोड पूर्व को आउखो। पूर्व किणने कहिजे? सितरलाख क्रोड वरस, ५६ हजार क्रोड वरस

निकले जिणने पूर्व कहिजे। उतरते आरे सवासो वरस को आउखो। लागते आरे ५०० धनुष्य को देहमान। उतरते आरे ७ हाथ को देहमान। ३२ पांसली। माता पिता जीवे जठे तांई बेटा बेटी की प्रतिपालना करे। भूख लागे तिवारे आहार करे, अवधि प्रमाणे। १ मेह वरसे तिवारे दस वरस तांई धरती को तेह जाय नहीं। धरती को स्पर्श किस्यो छे? फुल मैदा सरीखो। धरती को रस किस्यो छे? गुड सरीखो। धरती को तेह छे। लाज छे। मरजाद छे। राजनीति छे, न्याय छे। तिण आरा में ७५ वरस ८॥ महिना थाकतां रहे तिवारे त्रिशला देवीजी की कुखे महावीर स्वामीजी जन्म्या। ते महापुरुष को आउखो ७२ वरस को। तीन वरस ने ८॥ महिना चोथा आरा का थाकता रह्या तिवारे महावीर स्वामीजी मुक्ति पहुंता। इति चोथो आरो समत्तं।

हिवे पांचमो आरो दुखम नाम २१ हजार वर्ष को। लागते तो सवासो वरस को आउखो। उतरते २० वरस को आउखो। लागते तो सात हाथ को देहमान उतरते छेडे एक हाथ को देहमान। १६ पांसलिया। माता पिता जीवे जठे तांई बेटा बेटी की प्रतिपालना करे। भूख घणी २ लागे। आहार करे अवध प्रमाणे। खातो पीतो तृप्त हुवे नहीं। लाज नहीं, मरजाद नहीं, धरती को तेह नहीं। मनुष्य को नेह नहीं। तरसता तरसता मेह वरसे। वरसता २ सुके। धरती को स्पर्श किस्यो छे? धूल कांकरा सरीखो। रस पांचोंही ते किस्या? तीखो, कडुवो, कसायलो, खाटो, मीठो, ते पांचमो आरो थाकतां

तीन दिन रेसी. तिवारे देवता आकाश में हेलो पाडसी। हे देवाणुपिया! आजसुं तीजे दिन छठो आरो लागसी। जो कोई साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, व्रत पचखाण में, शील में, संतोष में सेठा रहसी जिको तो छठा आरा में आवे नहीं तिवारे ४ जीव चेता १ दुपसह नाम साधु आचार्य २ फाल्गुनी नामा साध्वी ३ नागल श्रावक ४ नाग श्री श्राविका ए च्यार जीव संथारो करीने, आलोई निंदी, निःशल्य थई एकावतारी होसी, पहले देवलोक जासी। इति पांचमों आरो समत्तं।

छठो दुखमा दुखम आरो। २१००० वरस को। लागते आरे २० वर्ष को आउखो। उतरते आरे १६ वर्ष को आउखो! छ वरस की लडकी गर्भ धारण करसी। वांकी पीडीयां, वांका पांव घडा जिस्यो माथो कैलडीरा पींडा सरीखो लीलाड, ओढवाने तार नहीं। अन्न को दाणो नहीं। काला कुदर्शनी, बुरे घाट का होसी। ते आरा में मेह किस्यो वरससी महाराज? हे गौतम खडगधारा सरीखो मेह। भोभर अंगारा सरीखो तथा खार सरीखो तथा बीजली सरीखो मेह वरससी। ईणसुं पीण अधिका घणा जाणजो। तिवारे पर्वत पाड टुक टुक होय जावसी तिवारे वायरा किस्याक वाजसी महाराज? हे गौतम! प्रलय कालको पवन चालसी तिणसुं पर्वत, पाड, हाट, हवेली प्रमुख रुई का पेल की तरह उडने खाड, खावच्या में जाय पडसी। भरत क्षेत्र ढालका तला समान होय जासी। ते मनुष्य तिर्यंच कठे रेसी महाराज! हे गौतम! वैताढय पर्वत में ७२ बील छे। ३६ उरले पासे छे। ३६ वैताढय के पेले पासे छे।

ते किम ! नव गंगा के पूर्व के कांठे नव गंगा के पश्चिम के कांठे । नव सिंधु के पूर्व कांठे । नव सिंधु के पश्चिम के कांठे । एवं ३६ दक्षिण भरत में एवं ३६ उत्तर भरत में एवं ७२ बील तिण में मनुष्य तिर्यंच प्रमुख रेसी । ते आहार किणरो करसी महाराज ? हे गौतम ! और नदियां तो विच्छेद जासी । दोय नदियां रेसी । गंगा ने सिंधु । ते चोडी केटली ? रथना चीला प्रमाणे उंडी रथनी धूरि प्रमाणे । तिणमें पाणी थोडो जीव घणा । मच्छ कच्छ प्रमुख तिणरो आहार करसी । ते मुहूर्त मात्र दिन प्रमाणे रेसी तिवारे बीलमें सुं नीकल ने मच्छ कच्छ प्रमुख काढी ने धूल में गाड देसी । शीत सुं सीक जासी सो तो दिन में खासी । प्रभातना गाडसी तिको सूरजसुं सीक जासी तिके रात ने खासी । ईम २१ हजार बरस तांई पेट भराई करसी । शरीर किस्यो वाससी महाराज ? हे गौतम ! जिस्या गाय का मडा सर्प का मडा कुत्ता का मडा तिणसुं पीण अधिका जाणजो । धरती को स्पर्श किस्योक छे । तरवार की धारा सर्प को डंख वीछु को डंख तिणसुं अधिको जाणजो । गौतम स्वामी हाथजोड मानमोड वंदणा नमस्कार करने भगवान ने कहे छटा आरानो जन्म मरण परो निवारो । तिवारे भगवान कहे हे गौतम ! दान देसी शील पालसी तपस्या करसी भावना भावसी शुद्ध श्रद्धा राखसी तिको तो छठो आरा में अवतरसी नहीं । ईति छठो आरो सम्पूर्ण ।

❀ २ अजीव तत्त्व ❀

जडलक्षण चैतन्यरहित तेहने अजीव तत्त्व कहीजे । अजीव तत्त्व का जघन्य १४ भेद ते कहेछे । ध र्मास्तिकायका ३ भेद । १ खंध, २ देश, ३ प्रदेश । अधर्मास्ति कायका ३ भेद। १ खंध, २ देश, ३ प्रदेश आकाशास्तिकायका ३ भेद । १ खंध, २ देश, ३ प्रदेश एवं ६। दशमो काल । पुद्गलास्तिकाय का ४ । भेद । १ खंध, २ देश, ३ प्रदेश, ४ परमाणु पुद्गल लूटो । एवं १४ हुआ ।

हिवे अजीवतत्त्व का उत्कृष्टा ५६० भेद कहेछे । ५ वर्ण (१ कालो, २ नीलो, राता, ४ पीलो, ५ धोलो) २ गंध (१सुगंध, २ दुर्गंध) ८ स्पर्श (१ ५ रस (१ तीखो, २ कडवो, ३ कसायलो ४ खाटो, ५ मीठो) खरखरो, २ सुंहालो, ३ भारी, ४ हलको ५ टाढो, ६ उनो, ७ लुखो, ८ चोपड्यो) संठाण (१ परिमंडल संठाण, २ वट्ट संठाण, ३ त्रंस संठाण ४ चउरंस संठाण, ५ आयत संठाण) एवं २५ भेद हुआ ।

हिवे काला वर्णमें २० बोल पावे ते ५ रस, २ गंध, ८ स्पर्श. ५ संठाण एवं २० हुआ जिम काला में २० तिम नीलामें वीश, तीम राता में २० तीम पीला में २० तीम धोला में २० पावे । वीश पचाने सो भेद हुआ ।

दो गंध में से एकेक में बोल पावे २३ । ५ वर्ण, ५ रस ५ संठाण, ८ स्पर्श । दोनु के मिलकर ४६ भेद हुआ ।

पांच रस एकेक में बोल पावे २० । ५ वर्ण २ गंध, ५ संठाण, ८ स्पर्श । पांचों के मिलकर १०० भेद हुआ ।

५ संठाण । एकेक में बोल पावे २० । ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ८ स्पर्श । पांचों के मिल कर १००
भेद हुआ ।

आठ स्पर्श । एकेक में बोल पावे २३ । ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ५ संठाण, ६ स्पर्श (खरखरा में
सुंहालो नहीं, सुंहाला में खरखरो नहीं, । भारी में हलको नहीं, हलका में भारी नहीं, इम दोय जोडे टाल
देखा) आठों के मिलकर १८४ भेद हुआ । एवं सर्व मिलीने ५३० भेद हुआ ।

हिवे अरूपीना ३० भेद कहे छे । धर्मास्तिकायना ३ भेद, (१ खंध, २ देश, ३ प्रदेश,) अधर्मा-
स्ति कायना ३ भेद (१ खंध, २ देश, ३ प्रदेश) आकाशास्ति कायना ३ भेद (१ खंध, २ देश, ३ प्र-
देश) एवं नव तथा दसमो काल । एवं १० भेद हुआ ।

धर्मास्तिकायने पांच बोल करीने ओलखीजे । १ द्रव्य थकी एक द्रव्य, २ क्षेत्र थकी लोक प्रमाणे,
३ कालथकी आदि अंत रहित, ४ भावथकी वर्ण नहीं, गंध नहीं, रस नहीं, स्पर्श नहीं. ५ गुणथकी
चलण गुण ।

अधर्मास्ति कायने पांच बोलां करीने ओलखीजे । १ द्रव्यथकी एक द्रव्य, २ क्षेत्रथकी लोक प्रमाणे,
३ काल थकी आदि अंत रहित, ४ भावथकी वर्ण नहीं, गंध नहीं, रस नहीं, स्पर्श नहीं ५ गुणथकी
स्थिर गुण ।

आकाशास्तिकाय पांच बोलां कर ओलखीजे। १ द्रव्यथकी तो एक द्रव्य, २ क्षेत्रथकी लोकालोक प्रमाणे, ३ कालथकी आदि अंत रहित, ४ भावथकी वर्ण, गंध, रस, स्पर्श नहीं, ५ गुणथकी आकाशं विकाश गुण।

कालना ५ भेद। १ द्रव्य थकी एक द्रव्य तथा अनंता द्रव्य ते अनंता कालचक्र हुआ ते माटे अनंता द्रव्य। २ क्षेत्रथकी अढीद्वीप प्रमाणे। ३ कालथकी आदि अंत रहित। ४ भावथकी वर्ण गंध, रस, स्पर्श रहित। ५ गुणथकी वर्तना लक्षण। सर्व मिलीने ३० भेद अरूपीना हुआ। एवं सर्व ५६० भेद अजीव-तत्त्व का जाणवा।

इति अजीव तत्त्व समाप्त।

३ पुण्यतत्त्व।

पुण्य नव प्रकारे बांधे। ४२ प्रकारे भोगवे। पुण्य का २ भेद। १ द्रव्य पुण्य २ भावपुण्य। अथवा १ निश्चय पुण्य, २ व्यवहार पुण्य। निश्चय अरु भाव पुण्य का स्वरूप एकहीज छे। और द्रव्य पुण्य अरु व्यवहार पुण्य ए दोनुं एकहीज छे। कांईक विस्तार कहे छे। निश्चे पुण्य ते आत्मा का शुभ परिणाम। तेह परिणामनी धारा ते निश्चे कहीजे। अने व्यवहार पुण्य बाहिर वर्ततो दिसे, निजर आवे ते व्यवहार पुण्य कहीजे। ते निश्चे पुण्य तो एकेन्द्रिय आदि देईने पंचेन्द्रिय ताईं अनाभोग पणे छे ते निश्चे भोग

कहीजे । व्यवहार पुण्य तो एकेन्द्रिय ते व्यवहार रास चढे । पंचेन्द्रिय मनुष्य होय, तिर्यंच होय, नारकी होय, देवता होय, बेंद्रिय, तेंद्रिय, चोरेन्द्रिय होय ते व्यवहार पुण्यमें जाणवो । व्यवहार पुण्य तो प्रगट दिसे छे ते रसादिक पामवो, रूपादिक पामवो । भावरूप पुण्य धर्मना परिणामे, शुभ दयादिक परिणाम, कोमल परिणाम, कपट रहित परिणाम एसा परिणाम होय ते अनेक भाव कहीजे । ए भाव पुण्य थकी द्रव्य पुण्य बांधे छे । द्रव्य पुण्य को कारण भाव पुण्य छे । जेवो भाव होय तेसो द्रव्य पुण्य होय । निश्चय पुण्य और भाव पुण्य दोनुं पुण्य आत्मा का परिणाम छे । व्यवहार पुण्य अने द्रव्य पुण्य ए दोनुं पुद्गल परिणाम कहीजे । हिवे पुण्य क्योंकर बांधे ते पुण्य बांधवानां कारण कहे छे । ते कारण सुं कार्य की प्राप्ति होय छे । ते कारण कहे छे । ते पुण्य नव कारण बांधे ते श्री वीतराग देवे कह्या छे । ते नव भेद कहे छे । १ अन्न पुन्ने २ पाण पुन्ने, ३ लयण पुन्ने, ४ सयण पुन्ने, ५ वत्थपुन्ने, ६ मनपुन्ने, ७ वचन पुन्ने, ८ काय पुन्ने, ९ नमस्कार पुन्ने । ए नव कारण । हिवे एहना अर्थ कहे छे । १ अन्न पुन्ने ते किणने कहीजे ? आहार दे सर्व जीव ने, सुपात्र कुपात्र को भेद नहीं करणो । आहार देता जीव पुण्य उपार्जे ॥ १ ॥

२ पाण पुन्ने कहतां पाणी को दान सर्वहीने देतो जीव पुण्य उपार्जे । इहां पण सुपात्र कुपात्र को भेद नहीं करणो ॥ २ ॥

३ लवण पुन्ने कहतां ठिकाणां थान देतां जीव पुण्य उपार्जे पण पात्र कुपात्र को भेद नहीं करणो ॥३॥

४ सयण पुन्ने बिछावणो देणो । कासको, पुम को, पराल, पाट, पाटीया, बाजोठ देणा । ए देतां थकां जीव पुण्य उपार्जे ।

५ वत्थपुन्ने-वस्त्र कपड़ानी जात सर्वहीने देणी ।

६ मनपुन्ने-शुभ मनराखे दान रूप, शीलरूप, तपरूप, भावनारूप, दयारूप, ए आदि देईने शुभमन राखे ते जीव पुण्य उपार्जे ए पुण्य समय समय उपजे छे ए पुण्य सर्व सुं सीरे छे ।

७ वचन पुन्ने कहतां मुख सुं शुभ वचन बोले आछो वचन नीकले ते पुण्य उपजे ए पुन्य घड़ी में उपजे छे ।

८ कायपुन्ने कहतां काया शरीर सुं पुण्य उपार्जे ते किम ? काया सुं दया पाले जीव जंत देखीने उभा रहे । काया सुं सेवा चाकरी विनय वैयावच करे ते जीव पुण्य उपार्जे ।

९ नमस्कारपुन्ने कहतां उत्तम गुणवंत जाणीने नमस्कार करतां जीव उत्तम पुण्य उपार्जे बाकी सामान्य पुण्य उपजे ।

ए नव भेद पुण्य उपार्जन का जाणवा यहां विशेष विस्तार कहे छे । एही ९ प्रकार को पुण्य सुपात्र जाणी करे तो अनंतानंत पुण्य उपार्जे अने कुपात्र ने करे तो थोडो पुण्य उपार्जे । ईहां दृष्टांत कहे छे । जैसे

वड का बीज वाया थको कितरो विस्तार होय छे । वड को बीज तो अति ही छोटो छे । ऊने विस्तार घणो छे । घणा वरस तांई रहे । तैसे एही नव प्रकार को पुण्य सुपात्र को करतो थको ए जीव संसार में सुखशाता घणी पावे । अथवा जुगलियां की भूमि मांही उपजे । ते जावजीव लगे सुख जाय नहीं । ऐसो अडील पुण्य भोगवे । अने खपायने मुक्ति पण पामे । एहवा सुपात्र को फल कह्यो । वली पुण्य सुं रूप, वल धन पावे । पांचुंही ज्ञान पावे । परिवार पामे । शरीर की कांति पामे । इत्यादिक अनेक भली वस्तु पामे । इति सुपात्र दान देने का दृष्टांत समत्तं ।

ए नव प्रकारे पुण्य कुपात्र ने करे तो थोडो सुख पावे । अंतरद्वीपा में उपजे ते जुगलिया आश्रयी जाणवो ते एकांत मिथ्यात्वी छे । के बीजो मनुष्य होय अल्प बल धन लक्ष्मी परिवारादिक भोग पामे ने पाछो संसार में रूले । मुक्ति नहीं जाय । ईहां दृष्टांत कहे छे । जैसे एरंड का रूख वध्या पछे फल पण थोडा लागे अने थोडा कालनी स्थिति रहे । पछे वेगो सुक जाय । जैसे पुण्य थोडो पामीने जातो रहे एथी मुक्ति नहीं । एहवो जाणी समकित सहित सुपात्रने विषे ए नव पुण्य कीजे । जे जीव करसी ते मुक्ति सुख वेगो पामसी । ते सुख अनंता काल रेसी एहवो जाणी अहो भव्य जीव सुपात्रने पुण्य कीजे । ए नव भेद पुण्य बांधवाना कारण छे ।

हिवे पुण्य तत्त्व का फल ४२ प्रकारे भोगवे ते कहे छे । १ शातावेदनीय, २ उंचगोत्र, ३ मनुष्य की

गति, ४ मनुष्यानुपूर्वी, ५ देवगति, ६ देवानुपूर्वी, ७ पंचेंद्रिय जाति, ८ उदारिक शरीर, ९ वैक्रिय शरीर, १० आहारक शरीर, ११ तैजस शरीर, १२ कार्मण शरीर, १३ उदारिक अंगोपांग, १४ वैक्रिय अंगोपांग, १५ आहारक अंगोपांग, १६ वज्रऋषभ नाराच संघयण, १७ समचोरंस संठाण, १८ शुभवर्ण, १९ शुभ-गंध, २० शुभ रस, २१ शुभ स्पर्श, २२ अगुरूलघु, २३ पराघात, २४ श्वासोश्वास, २५ आताप, २६ उद्योत, २७ शुभ विहायो गति, २८ निर्माण नाम, २९ तीर्थंकर नाम, ३० मनुष्य को आउखो, ३१ देवता को आउखो, ३२ तिर्यंच को आउखो, ३३ त्रस नाम, ३४ बादर नाम, ३५ पर्याप्ता नाम, ३६ प्रत्येक नाम, ३७ स्थिर नाम, ३८ शुभ नाम, ३९ सौभाग्य नाम, ४० सुस्वर नाम, ४१ आदेय नाम, ४२ जशोकीर्ति नाम. ए ४२ भेदे करी पुण्य जीवने उदय आवे। एहनो अर्थ कहे छे।

१ शाता वेदनीय–जीव जितना सुख पावे शरीर विषे सुख को पावणो, निरोगताइ को पावणो, धन धान्यादिक को पावणो दुपद चउपदादिक को पावणो और संसार के विषे सुख को पावणो ते शाता वेदनीय कर्म कहिजे।

२ उंचगोत्र–सर्व गोत्र ने विषे पूजनिक होय, सर्व मनुष्यों में उंचपणो पामे तेने उंचगोत्र कर्म कहिजे।

३ मनुष्य की गति–ते पण पुण्य का उदय थकी पामे।

४ मनुष्य की अनुपूर्वी ने किणने कहिजे–जीव मनुष्य गति को आउखो बांधी ने और गतिने विषे जीव जातो होय तेहने खींचने मनुष्य गति में संचारे मेले ते मनुष्यानुपूर्वी वलदनी नाथ सरीखी छे।

५ देवता की गति--पुण्य के उदय से पाये
६ देवता की अनुपूर्वी ते पण वलदनी नाथ पेरे और गति में नहीं जावा दे देवगति में मेले ।
७ पंचेन्द्रिय पणो पावे ।

८ उदारिक शरीर किणने कहिजे–हाड, मांस, लोही, राध, चामडी, नख, केश, इत्यादिक होय तथा कर्म खपावी मुक्ति जाय ते उदारिक शरीर कहिजे।

९ वेक्रय शरीर कहतां–जठे हाड मांस लोही राध चाम मलमूत्र नहीं होय अने स्वेच्छानुसार रूप करे छे ते वेक्रेय शरीर कहीजे ।

१० आहारक शरीर किणने कहीजे–१४ पूर्वधर साधुने कोई एक प्रश्न पूछे तब उत्तर दे सके नहीं जब १०मा द्वार मांहेथी पुतली मनुष्यना आकारे निकाले निकालीने जहां केवली होय तिहां जायने प्रश्न पूछे केवली कहे ते उत्तर देवे ते आहारक शरीर कहीजे ते एक हाथ प्रमाणे तेहनी देह होय ते पिण स्फटिकमय उजलो होवे आहारक शरीर पामे तेजस शरीर–शरीर में उष्ण पणो होयं, अन्न पाणीने पचावे ते तेजस शरीर कहीजे ११ कार्मण शरीरं–आठ कर्म करी सहित होय सो कार्मण शरीर कहीजे १२ पांच शरीर पुण्य उदयथी पामे हवे ३ शरीरनां अंगोपांग कहे छे ते अंग किणने कहिजे माथा १ छाती २ पेट ३ पुठि ४ दोयं हाथ ६ दोय पग ए आठ अंग कहीजे । उपांग किणने कहिजे आंगुल्यां पर्व रेखा

ते उपांग कहीजे अंगने उपांग ए दोनु एकठा मिले तव अंगोपांग कहीजे ए अंगोपांग उदारिक शरीर में होय ते उदारिक अंगोपांग कहीजे १३ एहीज अंगोपांग वैक्रेय शरीर में होय ते वैक्रेय अंगोपांग कहीजे १४ एहीज अंगोपांग आहारक शरीर में होय ते आहारक अंगोपांग कहीजे १५ वज्र ऋषभ नाराच संघयण ते जीहां वज्रनी तो हाडनी संधी जुडी होय मर्कट बंध वज्रनो पाटो होय वज्रनी खीली होय ते वज्रऋषभ नाराच संघयण कहीजे १६ समचोरस संठाण ते किणने कहीजे। जठे शरीर सुंदर आकार होय शरीरनो आकार चोकोन आकार रूप घणो होय ते समचोरस संठाण कहीजे १७ शुभ भलो वर्ण पांचो मांहिला पावे १८ दोय गंधमेंसुं भली गंध पावे १९ पांच रसमांहिथी भला रस पावे २० आठ स्पर्श मांहिथी भलो फरस पावे २१ ए पांच बोल पुण्य उदयथी जाणवा २२ अगुरु लघु ते किणने कहीजे नहीं भारी नहीं हलवो एहवो शरीर पावे ते अगुरु लघु कहीजे २३ परने घात करे तेहवा सरीरना परा कर्म होय दांत नख आदि देईने ते पराघात कहीजे २४ सुखासे श्वासोश्वास लिये ते पीण पुण्यना उदयथी पामे २५ सूर्यनी परे आतप होय क्रांति शरीरके विषे होय ते आताप नाम कर्म कहीजे २६ चंद्रमानी परे अग्निनी परे उद्योत होय ते उद्योतनाम कर्म कहिजे २७ शुभ विहायोगति ते किणने कहिजे भली चाल चाले हाथी हंसनी परे ते शुभ विहायोगति कहीजे २८ निर्माण कर्म ते हाथ, पग, आंख, नाक, कान मुख आदि शरीर सुंदराकार पामे ते निर्माण

नाम कर्म कहीजे २९ तीर्थंकर नाम किणने कहीजे तीनलोक में वंदनिक पूजानिक होय ते तीर्थंकर नाम
कहीजे ३० मनुष्य को आउखो थोड़ो तथा घणोपावे ३१ देवता को आउखो ते देवताको आउखो थोड़ो
तथा घणो पावे ३२ तिर्यंच को आउखो थोड़ो तथा घणो पावे ते तिर्यंच आयु कहीजे ३३ त्रसते किणने
कहीजे हाले चाले तावड़ा को छाया जाय ते त्रस कहीजे ३४ बादर ते किणने कहिजे मोटो शरीर नजर
आवे तो बादर कहिजे ३५ पर्याप्ता ते किणने कहिजे आप आपणी प्रजा पुरी पावे ते पर्याप्ता कहिजे
३६ प्रत्येक नामे कर्म किणने कहिजे जुदो २ सरीर पावें ते प्रत्येक नाम कर्म कहिजे ३७ स्थिर नाम कर्म
किणने कहिजे शुभ शरीर पामीये हाथ, पग, माथा, दांत, दाढ, स्थिरपामे ते स्थिर नाम कहिजे ३८ शुभ
नाम कि० शुभशरीर पामें हाथ पग नाक आंख मुख इत्यादिक शोभायमान पावे ते शुभ नाम कर्म ३९
सौभाग्य नाम कर्म जगत में शोभा घणी होय ते सोभाग्यनाम ४० सुस्वरनाम भलो कंठ पामें ४१ आदेय
नाम जगत में आदर सन्मान होय लोक वचन मानें पुछकर चाल करे ४२ यशोकीर्ति नाम संसार में य-
शकीर्ति घणी होय ते एवं ४२ बोल पुण्यरा सम्पूर्ण ।

ए पुण्यतत्त्व रूपी छे। च्यार गति का जीव मांहे देवता में पुण्य घणो छे। तेहथी मनुष्य में थोडो
तेह थी तिर्यंच में थोडो छे तेहथी नारकी में थोडो छे ए नव भेद पुण्यजीव अनंती वार पाम्यां पीण एहनो
कारज सर्यो नहीं । ते किम समकित में दृढता हुई नहीं । कदाच समकित, पाम्यां तो वली आंहि दीधा

नाम कर्म कहीजे २६ तीर्थंकर नाम किगाने [illegible]

में आंतरो नथी एकही छे। ज्ञान होय सो ए वात में समझे ने अज्ञानी नहीं समझे। हिवे पापना कारण थी दोष बंधे। संसार में भ्रमे कारज सिद्ध नाहीं होवे ते पापनी करणीना अठार भेद ते कहे छे १ प्राणातिपात, २ मृषावाद, ३ अदत्तादान, ४ मैथुन, ५ परिग्रह, ६ क्रोध, ७ मान, ८ माया, ६ लोभ, १० राग, ११ द्वेष, १२ कलह, १३ अभ्याख्यान, १४ पशुन्य, १५ पर परिवाद, १६ रति अरति, १७ मायामोसो, १८ मिच्छादंसण सल्लए अठारे पाप का भेद कह्या।

हिवे अठारे पापना अर्थ कहेछे। १ प्राणातिपात छकाया जीवनी हिंसा थकी निवर्ते नहीं २ मृषावाद झूठ बोलवो ३ अदत्तादान अणदीधी वस्तु लेवे ते चोरी करने ४ मैथुन—मैथुन सेववो घरकी तथा परस्त्री ५ परिग्रह परिग्रहलेवो तथा राखवो ते ममता भाव ६ क्रोध आप तपे ओरांने तपावे ७ मान अहंकार करवो ८ माया—कपटाई करवीते ६ लोभ मूर्च्छा वस्तु उपर १० राग-स्नेहथकी ११ द्वेष अणगमनी वस्तु देखीने द्वेष रीस करे १२ कलह मुख थकी कड़वो वचन बोलवो तेथी पैलाने क्रोध चढावे तथा क्लेश उपजे १३ अभ्याख्यान अणछता दोष देणा झूठा आल देणा चोर नहीं कहे तुं चोर छे, जार नहीं कहे तुं जार छे ते अभ्याख्यान १४ पैशुन्य चाड़ी चुगलि पारकी करणी ते पैशुन्य १५ परपरिवाद अनेरा ना अवर्णवाद बोलवा ते १६ रतिअरति संसार में ५ इन्द्रियां की २३ विषय मन गमति मिले तिमें राजी हुवे अणगमती में वेराजी हुए तथा संजम तपने विषे अरति ते रति अरति कहिजे १७.

माया मोसो कपट सहित झूट बोलवो ते १८ मिथ्यात्वदर्शन सल्ल ते खोटा देव गुरु धर्ममें संदेह तथा सिद्धांत मांहे शंका आणे ते मिथ्यात्व दर्शन शल्य । ए अठारे पाप करतां थकां जीव अशातानो बंध करे । तव जीवने पापनो फल कडुवो । परभव में भोगवणो पडे । हवे ८२ भेदे करी उदय आवे ते कहे छे पांच तो ज्ञानावरणीय, १ मतिज्ञानावरणीय, २ श्रुतज्ञानावरणीय, ३ अवधिज्ञानावरणीय, ४ मन पर्यव ज्ञानवर-णीय ५ केवल ज्ञानावरणीय, एवं ५। नवदर्शनावरणीय, ६ चक्षु दर्शनावरणीय, ७ अचक्षु दर्शनावरणीय ८ अवधि दर्शनावरणीय, ९ केवल दर्शनावरणीय, १० निद्रा, ११ निद्रा निद्रा, १२ प्रचला, १३ प्रचला प्रचला, १४ थिणर्द्धि निद्रा । १५ अशातावेदनीय हिवे १६ चोकडी कहे छे। १६ अनंतानुबंधी क्रोध, १७ अनंतानु बंधी मान, १८ अनं० माया, १९ अनं० लोभ, २० अप्रत्याख्यानी क्रोध, २१ अप्र० मान, २२ अप्र० माया, २३ अप्र० लोभ, २४ प्रत्याख्यानी क्रोध, २५ प्रत्या० मान २६ प्रत्या० माया, २७ प्रत्या० लोभ, २८ संजलनो क्रोध, २९ सं० मान, ३० सं० माया, ३१ सं० लोभ एवं १६ कषाय । हिवे नवनोकषाय कहेछे । ३२ हास्य, ३३ रति, ३४ अरति ३५ भय, ३६ शोक, ३७ दुगंछा, ३८ स्त्रीवेद, ३९ पुरुषवेद, ४० नपुंसकवेद, ४१ मिथ्यात्व मोहनीय, ४२ ऋषभनाराच संघयण, ४३ नाराचसंघयण ४४ अर्धनाराचसंघयण, ४५ कीलकुसंघयण ४६ छेवट्टु संघयण, ४७ न्यग्रोध परिमंडल संठाण, ४८ सा-दी संठाण, ४९ वामन संठाण ५० कुब्ज संठाण, ५१ हुंड संठाण ५२ स्थावर नाम, ५३ सूक्ष्मनाम, ५४

साधारण नाम, ५५ अपर्याप्ता नाम, ५६ अस्थिर नाम, ५७ अशुभ नाम, ५८ दौर्भाग्य नाम, ५९ दुस्वर नाम, ६० अनादेय नाम, ६१ अजशोकीर्ति नाम, ६२ नरकनी गति, ६३ नरकानु पूर्वी, ६४ नरकनो आउखो, ६५ तिर्यंचनी गति, ६६ तिर्यंचनी अनुपूर्वी ६७ एकेन्द्रिय जाति ६८ बेंद्रिय जाति, ६९ तेंद्रिय जाति, ७० चोरेंद्रिय जाति, ७१ अशुभवर्ण, ७२ अशुभगंध, ७३ अशुभ रस, ७४ अशुभ स्पर्श, ७५ उपघातनाम, ७६ नीचगोत्र, ७७ दानांतराय, ७८ लाभांतराय ७९ भोगांतराय, ८० उपभोगांतराय, ८१ वीर्यांतराय ८२ अशुभ विहायोगति एवं ८२ भेद कह्या ।

॥ हिवे तेहना अर्थ कहे छे ॥

१ मतिज्ञानावरणीय–मतिज्ञान को आवरण करे याने रोके २ श्रुतज्ञानावरणीय–श्रुतज्ञान को आवरण करें ३ अवधि ज्ञानावरणीय–अवधि ज्ञान को ढांके ४ मनः पर्यव ज्ञानावरणीय–मननी वात जाणवा दे नहीं ५ केवल ज्ञानावरणीय–केवल ज्ञान को रूके ६ चक्षुदर्शनावरणीय–नेत्र थकी देखवा दे नहीं ७ अचक्षुदर्शनावरणीय–नेत्र विना चार इन्द्रिय थकी देखवा दे नहीं ८ अवधि दर्शनावरणीय–अवधि दर्शन उपजवा दे नहीं ९ केवल दर्शनावरणीय–केवल दर्शन तीन जगतनो दिवाकर तीणं करीने लोक अलोक ६ द्रव्य जीव अजीव प्रमुख देखे ते देखवा दे नहीं ते केवल दर्शनावरणीय कहीजे १० निद्रा–सुखे जागे ११ निंद्रा निंद्रा–दुःखे जागे १२ प्रचला–बेठां तथा उभा निंद आवे १३ प्रचला प्रचला–हाथीनी स्वारी उपर उंघे तथा मार्ग

चालतां काम करतां निंद आवे १४ थीणोधि—वासुदेवसुं आधा बल हुवे ते छठे महिने ती निंद आवे निंद में हाले दिन में काम चिंतवे सुं रातने करे सुतांने भय उपजे घर का धन माल सिला हेठे जायने गाडे गज हाथीना दांत आगर में जायने खांच लावे ते निंद्रानो धणी मरीने कठे जाय भगवान ! हे गौतम ! सातमी नारकी तेतीस सागर के आउखे जायने उपजे १५ अशाता वेदनीय—संसार में दुःख अशाता पावे १६ अनंतानुबंधी क्रोध १७ अनं० मान १८ अनं० माया १६ अनं० लोभ० क्रोधतो पर्वत की राय, मान पत्थर को थांभो, माया वांस की जड़, लोभ करमचीनो रंग, अबंध करे तो जावजीवनी घात करे तो समकितनी, गति करे तो नरकनी २० अप्रत्याख्यानी क्रोध २१ अप्र० मान २२ अप्र० माया २३ अप्र० लोभ क्रोध तो धरतीनी राय, मान दांतरो थांभो, माया मींडारो सींग, लोभ नगर को कीच अबंध करे तो वरस दिनकी घात करे तो श्रावकपणा की गत करे तो तिर्यंच की २४ प्रत्याख्यानी क्रोध २५ प्र० मान २६ प्र० माया २७ प्र० लोभ क्रोध तो वालु की लीक, मान लकडानो थांभो, माया वलदा को मात्रो, लोभ गाडीरो खंजण अबंध करे तो च्यार मास की घात करे तो साधु पणारी गति करे तो मनुष्य की २८ संजल को क्रोध २६ सं० मान ३० सं० माया ३१ सं० लोभ क्रोध तो पाणीनी लीक, मान तीणांरों थांभो माया वांस की छांती लोभ हलद पतंग को रंग अबंध करे तो १५ दिनकी घात करे तो जथाख्यात चारित्र की तथा केवल पणा की गति करे तो देवतारी एवं च्यार चोक १६ कषाय हुआ । अब नव नो कषाय

कहे छे ३२ हास्य ३३ रति—मनमानी वस्तु सुं राजी होवे ते रति मोहनीय कहीजे ३४ अरति—अणगमती वस्तु देखीने वेराजी होय ३५ भय ३६ शोक ३७ दुगंछा सुग करे, थुंके, मुंह मचकोडे अशुचि वस्तु देखी ने ३८ पुरुष वेद—स्त्री देखीने भोगनी अभिलाषा करे ३९ स्त्री वेद—पुरुष देखी ने भोग की वांछा करे ४० नपुंसक वेद—स्त्री पुरुष दोनुं से भोग की वांछा करे ४१ मिथ्यात्व मोहनीय—कुदेव, कुगुरु, कुधर्म मांही मोही रहे ४२ ऋषभनाराच संघयण ते वज्रना हाड होय वज्रनो पाटो होय, वज्रनी खीली २ होय दोनों पास मरकट बंध होय ते ऋषभनाराच संघयण ४३ नाराच संघयण—वज्रना हाड तो खरा पिण वज्रनो पाटो नहीं ४४ अर्ध नाराच संघयण—एक पासा मर्कट बंध होवे ४५ कीलकु संघयण—मर्कट बंध न होय दोनुं आंगुली का आंकडीया तीमें हाड होवे ४६ छेवटु संघयण—आंगुलीना छेहडा लाग्या होय. ४७ न्यग्रोधपरिमंडल संठाण—नाभी उपरे भलो सुंदर आकार पामे ४८ सादी संठाण—नाभी हेठे सुंदर आकार पामे ४९ कुब्ज संठाण कुबडा सरीरनो आकार होय ५० वामन संठाण—सरीर छोटो ठींगणो होवे ५१ हुंड संठाण—पाणीनी भरी जीभ मसक होय एवं आकारे होग ते हुंड संठाण अब स्थावर का दशक कहते हैं ५२ थावरनाम—स्थावरपणो पामे ते पृथ्वी, अप, तेउ, वाउ वनस्पति में उपजे ५३ सूक्ष्म नाम ते सूक्ष्म शरीर पामे छोटी देह पामे ५४ अपर्याप्ता नाम—आप आपणी प्रजा पूरी न पामे ५५ साधारण नाम—एक शरीर में अनंता जीव हुवे ५६ अस्थिर नाम—हाथ पग आदि स्थिर नहीं पामे ५७ अशुभ

नाम–सोहामणो सरीर पावे नहीं ५८ दुर्भाग्य नाम–जगत में शोभा नहीं, भलो कोई नहीं कहे ५६ दुस्वर नाम–माठो असुहामणो कंठ पावे ६० अनादेय नाम–जगत में आदर सत्कार नहीं जठे जाय वठे अनादर हुवे ६१ अजशो कीर्ति नाम–जश कीर्ति पावे नहीं ६२ नरकनी गति–नरक में उपजे ६३ नरकानु पूर्वी-नरकनी गति बांधी छे जीव मरीने अनेरी गति में जाने दे नहीं बलदनी नाथ सरीखी अनुपूर्वी कहिजे ६४ नरकनो आउखो–जघन्य १० हजार वर्षनो उत्कृष्टा ३३ सागररो ६५ तिर्यंच गति–५ थावर ३ विकलेन्द्रिय तथा तिर्यंच पंचेन्द्रिय में उपजे ६६ तिर्यंच की अनुपूर्वी–उणहीज गति में जाय दूजी गति में जावा दे नहीं ६७ एकेन्द्रियनी जाति ६८ बेइन्द्रियनी जाति ६६ तेइन्द्रियनी जाति ७० चोरेन्द्रियनी जाति ७१ अशुभ वर्ण ७२ अशुभ गंध ७३ अशुभ रस ७४ अशुभ स्पर्श ७५ उपघात नाम–सर्व जन आगले डरतो रहे ७६ नीच गोत्र–निंदनिक कुल में उपजे ७७ दानांतराय–दान देवा में अन्तराय पामे ७८ लाभांतराय–व्यापार आदि में लाभ मिलवा दे नहीं ७६ भोगांतराय–पंचेन्द्रियनो भोग एकवार पिण भोगववा दे नहीं ८० उपभोगांतराय–पांचइन्द्रियना भोगने वार वार भोगववा दे नहीं ८१ वीर्यांतराय–धर्म ने विषे तथा ज्ञान दर्शन चारित्र तपने विषे बल पराक्रम फोरववा दे नहीं ८२ अशुभ विहायो गति-ते माठी चाल चले उंटकी, खरकी, भैंसा की चाल चले इति पापतत्त्व सम्पूर्ण ।

पांचमो आश्रव तत्त्व ।

आश्रव कोने कहीजे जीव रूपियो तलाव कर्म रूपया पाणी पांच आश्रव द्वार रूपनाला करी भरे तीने आश्रव तत्त्व कहीजे आश्रव का २० भेद कहे छे । उत्कृष्टा ४२ भेद । जघन्य २० भेद कहे छे ।

१ प्राणातिपात–जीव की हिंसा करे ते आश्रव ।
२ मृषावाद–झूठ बोले ते आश्रव ।
३ अदत्तादान–चोरी करे ते आश्रव
४ मैथुन–कुसील सेवे ते आश्रव ।
५ परिग्रह–श्रोतेन्द्रिय मोकली मेले ते आश्रव ।
७ चक्षुरिन्द्रिय मोकली मेले ते आश्रव ।
८ घ्राणेन्द्रिय मोकली मेले ते आश्रव ।
९ रसेन्द्रिय मोकली मेले ते आश्रव ।
१० स्पर्शेन्द्रिय मोकली मेले ते आश्रव ।
११ मिथ्यात्व–कुदेव कुगुरू कुधर्म माने ते आश्रव ।
१२ अव्रत–व्रत पच्चखाण न करे ते आश्रव ।

१३ प्रमाद-प्रमाद सेवे ते आश्रव।

१४ कषाय--२५ कषाय सेवे ते आश्रव।

१५ अशुभजोग--माठा जोगं वर्ते ते आश्रव।

१६ मन मोकलो मुके ते आश्रव।

१७ वचन मोकलो मुके ते आश्रव।

१८ काया मोकली मुके ते आश्रव।

१९ भंड उपकरण उपधि अजत्नासु लेवे मुके ते आश्रव।

२० शुचिकुसग्ग मात्र अजत्नासु लेवे मुके ते आश्रव।

हिवे उत्कृष्टा ४२ भेद आश्रव ना कहे छे। ते पीण नाला छे कर्म रूप पाणी आवे ताका पांच ईंद्रिय १ श्रोतेन्द्रिय, २ चक्षुरिन्द्रय, ३ घ्राणेन्द्रिय, ४ रसेन्द्रिय, ५ स्पर्शेन्द्रिय। च्यार कषाय १ क्रोध, २ मान, ३ माया, ४ लोभ। पांच अव्रत १ हिंसा, २ झूठ, ३ चोरी, ४ कुसील, ५ परिग्रह। जोग तीन १ मन जोग, २ वचन, जोग ३ काय जोग। एवं १७ पच्चीस क्रिया एवं सर्व मिली ४२ भेद हुआ।

हिवे तेहना अर्थ कहे छे। ५ ईंद्रिय मोकली मेले ते आश्रव। ४ कषाय सेवे ते आश्रव, ५ अव्रत सेवे ते आश्रव, ३ जोग माठा प्रवर्तावे ते आश्रव, एवं १७ भेद। हिवे २५ क्रिया कहे छे।

१ काईया–शरीर अजतनासुं प्रवर्तावे.

२ अहिगरणीया–शस्त्रादिक से जीव की घात होवे ते.

३ पाउसिया–जीव अजीव उपरे द्वेष राखे सो.

४ पारितावणीया–आप तपे परने तपावे.

५ पाणाईवाई–जीवनी हिंसा करे.

६ आरंभिया–खेती; घर प्रमुख आरंभ करे.

७ परिगहिया–धन धान्यादिक परिग्रह राखे ते.

८ मायावत्तीया–कपट करीने परने वंचे ते.

९ अपच्चखाणवत्तिया–व्रत पच्चखाण किञ्चित मात्र नहीं करे.

१० मिच्छादंसणवत्तिया–जिन वचन अणसद्दहतां थकां विपरीत प्ररूपणा करे ते.

११ दिट्ठीया–कौतुक, तमासा, मेला, खेल नेत्र थकी देख्यां किरिया लागे.

१२ पुट्ठिया–रागे करी स्त्री, पुरुष, गाय वलद वस्त्र प्रमुख ने स्पर्श करता लागे ते.

१३ पाडुचिया–जीव अजीव उपर हरखकरी तथा द्वेष करी अपणो सामंतपणो देखावे ते.

१४ सामतोवणिया–आपणा उंट घोडा वलद प्रमुख भला पदार्थ देखीने सर्व लोक में प्रशंसा करे ते.

१५ नेसत्थिया–शस्त्र विना लाकड़ी, लोढी प्रमुखे करी किरिया लागे ते.

१६ साहत्थिया–आपरे हाथे करे.

१७ आणवणिया–आज्ञा देवें.

१८ विदारणिया–जीव अजीव कुं विदारें.

१९ अणाभोगी–अजाणपणे शून्य उपयोगसुं लागे ते.

२० अणवकंखवत्तिया–अनेरा धर्मनी वांछा करवे.

२१ अनापयोगी–विना उपयोगसुं लागे ते.

२२ सामुदाणी–आठ कर्मनो समुदाय जिण करी नाटक प्रमुख जोवे, चोर मारतां देखे तथा सती होतां देखे तें.

२३ पेजवत्तिया–राग करें.

२४ दोसवत्तिया–द्वेष करें.

२५ ईरियावहिया–श्री केवली भगवान ने पिण काय जोगे करी लागे ते पहले समय लागे दुजे समये वेदे तीजे समयं निजरें इसी सपर्थाई केवलीजीनी छे ते पीण सजोगी गुणठाणे ते इरियावही क्रिया

इति आश्रव का ४२ भेद सम्पूर्ण ।

हिवे त्रीजो प्रकार आश्रवनो कहे छे आश्रवना ५७ भेद कहे छे। पिण मूल तो भेद ४ छे। १ मिथ्यात्व, २ अव्रत, ३ कषाय, ४ जोग। तेहनो विस्तार कहे छे।

मिथ्यात्वना पांच भेद कहे छे? अभिग्रहिक मिथ्यात्व ते किणने कहीजे? पकडी टेक छोडे नहीं ते अभिग्रहिक मिथ्यात्व कहीजे। २ अनाभिग्रहिक मिथ्यात्व ते किणने कहिजे? देवगुरु धर्म सर्व सरीखा माने। पण आछा भूंडानी परख नहीं करे। ते अनाभिग्रहिक मिथ्यात्व कहिजे। ३ अभिनिवेसिक मिथ्यात्व ते किणने कहिजे? भगवंत वीतराग देवना मार्गसुं विपरीत परूपे। शास्त्र में छे ज्युं नहीं कहे। मन माने तिम कहे। केवली कहे तिम न कहे ते अभिनिवेसिक मिथ्यात्व। ४ अनाभोग मिथ्यात्व किणने कहीजे? नास्तिकवादी स्वर्ग, नर्क पुण्य पाप प्रमुख का अस्तित्व न माने अज्ञान रूप विकल्प दशा अजाण छे ते अनाभोग मिथ्यात्व कहीजे। ५ संशयिक मिथ्यात्व ते कि० ॥ जिन वचन में संदेह आणे ते संशयिक मिथ्यात्व कहीजे। हिवे १२ अव्रत कहे छे। पांच तो इन्द्रिय ते व्रत पचखाण करने रोके नहीं, छट्ठो मन वश करे नहीं, ते अव्रत छे। ६ कायनी पण दया न पाले तथा व्रत पचखाण नहीं करे। एवं ६ दुवारे १२। हिवे २५ कषाय ते कहे छे। १६ कषाय तथा नव नो कषाय हास्यादिक एवं २५। हिवे १५ जोग कहेछे। चारमनका, च्यार वचन का सात कायाका एवं १५। अर्थ कहेछे १ सत्य मनजोग ते साचोही मनमें चिंतवे। २ असत्य मन जोग ते झूठमें ही मन रहै, झूठी

बात चिंतवे । ३ मिश्रमनयोग ते कुछ साचो कुछ झूठो मनमें चिंतवे ते । ४ व्यवहार मनजोग ते साच पण नहीं झूठ पीण नहीं ईम चिंतवे ते । एवं ४ । हिवे वचन का ४ भेद कहेछे । १ सत्य वचन जोग कि० साचोही वचन बोलणो । २ असत्य वचन जोग ते कि० जठे झूठ वचननो बोलणो जैसे सोनाने पीतल कहे । धर्मने अधर्म कहे । ईम अनेक भेद झूठना छे ते असत्य वचन कहिजे । ३ मिश्रवचन जोग ते कि० झूठ पण बोले साच पण बोले ज्यों ए धान्य सर्व ही सुली गयो सर्व ही तो सुल्यो नहीं कितरोईक सुल्यो है ते मिश्र वचन कहिजें । ४ व्यवहार वचन कि० झूठ पण नहीं बोले साच पीण नहीं बोले जिम पंखीना बोल ढांढानी भाषा, बालक रोवे ते भाषा इत्यादिक अनेक वचन बोले ते व्यवहार वचन जोग कहिजे । हिवे सात कायाना जोग कहे छे । उदारिक काय जोग ते किणने कहिजे ? हाड, मांस, लोही, चाम, नख, केश, राध, मल, मूत्र, वीर्य एहथी भरियो होय अशुचिमय होय तथा अजयणासुं कायाने हलावे चलावे ते उदारिक काय जोग । २ उदारिक मिश्र कि० । कोई देवता चवीने मनुष्य में तथा तिर्यंच में उपज्या चाहे तिण वीर्य में कार्मणसुं मिलावे ते उदारिक काय मिश्र । ३ वैक्रिय काय जोग ते कि० । जठे एकना अनेक होय । हाड, मांस, लोही, राध, चाम, नख, केश मल मूत्र वीर्य ए नहीं होय । हालण चालण की क्रिया होय ते वैक्रिय काय जोग । ४ वैक्रिय का मिश्र काय जोग ते कि० कोई मनुष्य तथा तिर्यंच देवता में उपजवा चाहे छे तिण वेला में कार्मण सुं मिल्यो ते वैक्रिय काय मिश्र योग कहिजे । ५ आहारक काय जोग कि० आहारक शरीर नो मवर्तणो हालण चालण रूप क्रिया करणी ते आहारक

काय जोग। ६ आहारक मिश्र काय जोग कि० ते आहारक केवली ने पुछि ने पाछो वाहुड़े ने दशमे द्वार पैसती वेला कार्मणसुं मिल्यो ते आहारक मिश्र काय जोग कहिजे। ७ कार्मण जोग ते कि० आठ कर्म करी सहित होय तथा कार्मण शरीर नो व्यापार प्रवर्तणो हलन चलन रूप ते कार्मण काय जोग कहिजे एवं ४ मनका ४ वचन का ७ काया का एवं १५ हुआ। तथा सर्व मिलाने ५७ भेद आश्रवका जाणवा। इति आश्रव तत्त्व सम्पूर्ण।

६ संवर तत्त्व।

हिवे संवरतत्त्वना जघन्य तो २० भेद। उत्कृष्टा ५७ भेद। ते जघन्य २० भेद कहे छे। १ प्राणातिपात जीवनी हिंसा नहीं करे ते संवर। २ मृषावाद झूठ नहीं बोले ते संवर। ३ अदत्तादान चोरी नहीं करे ते संवर। ४ मथुन कुशील नहीं सेवे ते संवर ५ परिग्रह नहीं राखे ते संवर। ६ श्रोतेन्द्रिय वश राखे ते संवर। ७ चक्षुरिन्द्रिय वश करे ते संवर। ८ घ्राणेन्द्रिय वश करे ते संवर। ९ रसेन्द्रिय वश करे ते संवर। १० स्पर्शेन्द्रिय वश करे ते संवर। ११ समकित ते संवर। १२ व्रतपच्चखाण ते संवर। १३ कषाय न करे ते संवर। १४ शुभ जोग प्रवर्तावे ते संवर। १५ प्रमाद न करे ते संवर। ते प्रमादना ५ भेद कहेछे। मद कहतां आठ मद ते कहेछे। १ जाति मद ते किणने कहिजे? माहारी जात मोटी, उत्तम अनेरा, नीच जात छे ईम मद करे ते जातिमद तेहनी उत्कृष्टी स्थिति बांधे तो अनंत काल तांई नीच जाति में उपजे। २ कुलमद ते किणने कहिजे? माहरो कुल मोटो हुं उत्तम कुलनो उपन्यो अनेरा नीच कुलना

उपन्या ईम मद करे ते कुल मद तेहनी उत्कृष्टी स्थिति बांधे तो अनंता काल तांई नीच कुलमें उपजे । ३ बलमद ते हम बलवंत पराक्रमी ईम गर्व करे तेहनी उत्कृष्टी स्थिति अनंत काल तांई बल हीण होय ते बलमद कहिजे । ४ रूप मद ते किणने क० । आपरो रूप सरावे, माहारो रूप चोखो अनेरानो भुंडो ईम कहे तेहनी उ० स्थिति बांधे तो अनंत काल तांई रूपकरने रहित होय ते रूपमद कहिजे । ५ तपमद ते कि० ते तपस्यानो मद अहंकार करे । हुं तपस्वी उत्तम इम आपणी सरावणा करे ने अनेराने विसरावे तेनी उत्कृष्टी स्थिति बांधे तो अनंत काल तांई तपस्या करी रहित होय ते तपमद कहीजे । सूत्र मद कि० । सूत्र सिद्धांत भणवा, गुणवाका, सीखवाका, धारवाका मद करे, हुं पंडित अनेरो ठोठ ईम आपणी सरावणा करे । अनेराने वीसरावे तेहनी उत्कृष्टी स्थिति बांधे तो अनंता काल तांई ज्ञान रहित होयने नर्क निगोद में भमे ते सूत्रमद कहीजे । ७ लाभमद ते कि० हुं जठे जाउं जठे लाभ घणो हुवे अनेराने थोड़ो हुवे । ईम मद अहंकार करे । तेहनी उत्कृष्टी स्थिति बांधे तो अनंता काल तांई लाभ रहित होय । भलीवस्तु नहीं मिले ने दरिद्री होय ते लाभमद कहीजे । ८ ऐश्वर्य मद ते कि० हुं सारानो स्वामी मोटो अनेरा दास समान छे । ईम आपनी प्रशंसा करे ओरांने वीसरावे तेहनी उत्कृष्टी स्थिति बांधे तो अनंता काल तांई दास पणे उपजे ते ऐश्वर्य मद कहीजे । ते प्रमाद जाणवो । पांच ईन्द्रिय ने विषयने विषे मोकली मेले ते प्रमाद । निद्रा करे ते प्रमाद । ए पांच प्रमाद नहीं करे ते संवर । एंव १५ । १६ मन वश करे ते संवर ।

१७ वचन वशकरे तथा निर्वद्य वचन बोले ते संवर। १८ काया वश करे ते संवर। १६ भंड उपकरण जयणा सुं लेवे ने जयणा सुं मेले ते संवर। २० सुचि कुसगमात्र जयणासुं लेवे ने जयणा सुं मेले ते संवर। २० ए २० भेद संवरना जाणवा।

हिवे संवरना उत्कृष्टा सतावन भेद कहेछे। पांच समिति ते १ ईरिया समिति २ भाषा समिति ३ एषणा समिति ४ आदान भंड मत निक्षेपणा समिति ५ उच्चार पासवण खेल जल संघाण पारिठावणीया समिति। तीन गुप्ति कहेछे ६ मन गुप्ति, वचन गुप्ति, ८ काय गुप्ति। बावीश परिसह कहेछे। ६ क्षुधा परिसह। १० तृषा परिषह। ११ शीत परिषह। १२ उष्ण परिषह। १३ डांसमंस प०। १४ अचेल परि० १५ रति परि० अरति परि० १६ स्त्री परि०। १७ चरिया परि०। १८ नीसीया परि०। १६ सेज्या परि०। २० आक्रोश परि० २१ वध परि०। २२ जाचना परि० २३ अलाभ परिसह० २४ रोग परि०। २५ तिणफास परि० २६ जल परि० २७ सक्कार पुरक्कार परि० २८ पन्ना परि० २६ अज्ञाननांपरि० ३० समकित परि०।

हिवे दशविध जति धर्म कहे छे। ३१ खंती ३२ मुत्ति; ३३ अजवे, ३४ मद्दवे, ३५. लाघवे, ३६ सच्चे, ३७ संजमे, ३८ तवे ३६ चियाए ४० बंभचेर वासे।

हिवे १२ भावना कहे छे ४१ अनित्य भावना ४२ अशरण भावना, ४३ संसार भावना,, ४४ एकत्व भावना, ४५ अन्यत्व भावना ४६ अशुचि भावना, ४७ आश्रव भावना, ४८ संवर भावना ४६ निर्जरा भावना ५० लोक रूप भावना, ५१ बोध भावना, ५२ धर्म भावना।

हिवे ५ चारित्र कहे छे। ५३ सामायिक चारित्र. ५४ छेदोपस्थापनीय चारित्रं; ५५ परिहार विशुद्ध चा-
रित्र, ५६ सूक्ष्म संपराय चारित्र, ५७ यथाख्यात चारित्र एवं ५७।

हिवे ५ समिति का अर्थ कहे छे। १ ईरिया समिति ते च्यार हाथ प्रमाणे जयणासुं धरती त्रिंप
जोयने चाले ते ईरियासमिति कहीजे । २ भाषा समिति ते कि० वेयालीस दोष टाली भाषा बोले
ते पाप कारी भाषा, सावद्यभाषा, हिंसारूप भाषा, कठोर भाषा, मर्म की भाषा, तुंकार रूप भाषा बोले
नहीं । ३ एषणा समिति किणने कहीजे ? वेयालीस दोष टाली आहार ले, जीवनी हिंसा होय ते आहार
नहीं ले ते एषणा समिति कहीजे । ३ आदान भंड निखेवणा समिति कि० धीरजसुं जयणासहित भारी
तथा हलकी तिण मात्र वस्तु लेवे तथा मेले ते आदानभंड । ४ पारिठावणिया समिति ते मलमूत्र, सलेखम,
मेल, लीट, पाणी, प्रमुख जयणासुं परठे ते पारिठावणिया समिति । ६ मनगुप्ति ते कि० जीवहिंसा आदि
देईने तेने विषे माठो मन नहीं राखे ते मनगुप्ति कहीजे । ७ वचन गुप्ति ते कि० हिंसा रूप वचन सावद्य
पाप रूप वचन नहीं बोले तथा घणो नहीं बोले । पेलाने ज्ञान पावे, धर्म पावे, तिम बोले ते वचन गुप्ति । ८
काय गुप्ति कि० सरीरने जयणासुं हलावे चलावे अजयणा नहीं करे ते कायगुप्ति कहीजे। बावीश परिसहनो
अर्थ कहे छे। ९ क्षुधा परिसह कि० क्षुधा सहन करे पण छकायनी हिंसा नहीं करावे सुझतो फासुक गृह-
स्थने अर्थे नियन्यो होय ते निर्दोष लेवे ते क्षुधा परिसह कहीजे । १० तृषा परिसह किणने कहिजे ? फा-

सुक पाणी २१ जातको लेवे। निर्दोष जाणीने पण काचो पाणी दोपीलो पाणी सर्वथा नहीं लेवे ते तृषा परिसो कहीजे। ११ शीत परिसह कि० शीतकाल आवे तद शीत सहे पिण अग्नि प्रमुख मन करने वांछे नहीं ते शीत परिसह कहीजे। १२ उश्न परिसह कि० उनालो आवे जद सरीरने विषे गरमी होय परसेवा चले तो वायरो लेवे नहीं तथा स्नान करे नहीं ते उश्न परिसह कहीजे। १३ डांस मंस परिसह ते कि० काउसग्ग मांही डांस, मच्छर, जु, मकोडा प्रमुख काटे ते परा नहीं करे ते डांसमंस परिसह। १४ अचेल परिसह कि० वस्त्र रहित होय तथा फाटो वस्त्र होय तथा मानोपेत वस्त्र होय ते अचेल परिसह। १५ अरति परिसह कि० डील कपडा धोवे नहीं तथा जायगा वस्त्र पात्र आहार प्रमुख मनगमताने सरावे नहीं अणगमताने विसरावे नहीं। सम परिणाम राखे ते अरति परिसह। १६ स्त्री परिसह ते कि० स्त्री मनोहर रूपवंत देखीने मनमें लावे नहीं काम अभिलाषा उपजावे नहीं ते स्त्री परिसह कहिजे। १७ चरिया परिसह कि० दिन प्रत्ये चालवो एक गाम सुखे समाधे रेणो नहीं साधु तथा साध्वीने कारण विशेपनी वात न्यारी वाकी अप्रतिबंध विहार करणो। वायरानी परे ते चरिया परिसह कहीजे। १८ निसीया परिसह कि० स्मशान शून्य घर गुफादिक ठिकाणा अनेक भातना वठे काउसग्ग करे। नाना प्रकारना ठीकाणे यह चेष्टा करे नहीं ते निसिज्या परिसह कहीजे। १९ सिज्या परिसह कि० उंची नीची धरती समी नहीं करे तथा शीत उष्ण काल में चित्त में उद्वेग न करे ते सीज्या परिसह कहीजे। २० आक्रोस परिसो कि० अज्ञानी

लोक दुष्ट वचन कहे ते उपरे क्रोध करे नहीं ते आक्रोस परिसह । २१ वध परिसह कि० कोई दुष्ट पापी लोग साधु ने बांधे, मारे, ताड़ना तर्जना लाठी लाकडी प्रमुख करीने पण ते साधु रीस करे नहीं ते वध परिसह कहिजे । २२ जाचना परिसह कि० भीख मांगी आहारले, नित्य प्रति कोई राखे नहीं, कोई दे कोई न दे । ते सम परिणाम सहे । मांगतां थकां अंतराय कर्म ने उदय कोई दे नहीं तो इम चिंतवे जीव! थारे लाभांतराय छे तेथी दे नहीं । इम चिंतवे पिण ते उपर द्वेष न करे ते अलाभ परिसह कहिजे । २३ रोग परिसह ते कि० शरीर ने विषे अशाता उपजे ते सावद्य पाप सहित औषध लेवे नहीं ते रोग परिसह कहिजे । २५ तीणफास परिसह ते किणने कहीजे डाभ प्रमुखना संथारा उपर साधुजी सोवे वेसे ते तिणरो फरस सहे पिण द्वेष न करे ते तिणफास परिसह कहिजे । २६ मेल परिसह ते किणने कहीजे शरीर ने विषे मेल लागे तो परो करे नहीं जावजीव लगे ते मेल परिसह कहिजे । २७ सकार पुरस्कार परिसह ते कि० कोई लोग साधुने वांदे पूजे आदर सन्मान दे कोई न देवे तो इम न चिंतवे देखो माने मान नहीं इम द्वेष न करे ते सत्कार पुरस्कार परिसह । २८ प्रज्ञा परिसह कि० ज्ञान घणो होय तो मनमें पोते गर्व करे नहीं ते प्रज्ञा परिसह कहीजे । २९ अज्ञान परिसह कि० घणो ज्ञान नहीं होय भणवो आवे नहीं तो इम नहीं चिंतवे देखो हुं भणयां नहीं कांई करस्युं इम द्वेष न करें पश्चाताप न करे ते अज्ञान परिसह । ३० समकित परिसह कि० जिन शासन ने विषे तथा देवगुरु धर्मने विषे

संदेह न करे देखो आज लगे समकित पालतां घणा दिन हुआ पिण कोई चमत्कार देवादिकनो देख्यो नहीं इम न चिंतवे ते समकित परिसह कहिजे। इति २२ परिसह संपूर्ण। हिवे १० जति धर्म कहे छे। ३१ खंती धर्म कि० क्रोधनो त्याग करे तथा किणही उपरे क्रोध न करे ते क्षमाधर्म कहिजे। ३२ मुक्ति कहतां निर्लोभपणो राखे लोभ न करे एतले संजम आदरे ते ३३ अजवे कहतां कूड कपट न करे मायानो त्याग करे सरल भाव राखे ते अजवे धर्म कहिजे। ३४ मदवे अहंकार करे नहीं मान जीते ते मदवे धर्म कहीजे। ३५ लाघवे धर्म १ द्रव्ये २ भावे हलको द्रव्य से ते उपकरणादिक अल्प। भाव से पापनो त्याग करे तथा लोभ त्यागे ते लाघवे धर्म कहीजे। ३६ सच्चे कहतां छेदतां भेदतां थकां झूठ सर्वथा बोले नहीं तथा झूठ त्याग ने सत्य धर्म कहिजे। ३७ संजमे क० जीवने सर्वथा मारे नहीं तथा सतरे भेद संजम पाले ते संजमे कहिजे। ३८ तवे कहतां बार भेद तप तपे तथा खोटा तपना त्याग करे ते तप धर्म कहिजे। ३९ चीयाए क० किंचित् मात्र परिग्रह ममता रूप राखे नहीं तथा सुई मात्र धातु वस्तु राखे नहीं कोडी मात्र दाम राखे नहीं ते चीयाए धर्म। ४० बंभचेर वासे क० नव वाड सहित शील व्रत पाले ते ब्रह्मचर्य कहीजे एवं १० विध जति धर्म कह्या। हिवे १२ भावनारो अर्थ क० अनित्य भावना किणने कहिजे संसार में धन, धान्य माता, पिता, कुटुंब, परिवार, शरीर, यौवन प्रमुख स्थिर नहीं है। ए सर्व अनित्य छे विनाशिक छे। इसी भावना भावे ते किणने किणने भाई मरु देवी माताजी भरतेश्वरजी। ४१ अशरण

भावना कि० संसार में जब काल आवे तब माता, पिता, कुडुंब, परिवार, धन, दोलत, इत्यादिक कोई राखवा समर्थ नहीं एक श्री जैन धर्महीज राखे अजरामर ठिकाणे पहुंचावे एसो मनमें चिंतवणो ते अशरण भावना ते किण भाई अनाथी मुनिराय। ४३ संसार भावना ते कि० जीव तुं चोरासी लाख जीवाजोनिमें अनंतिवार भम्यो तथा एकेक जोनिमें अनंत अनंत वार भम्यो। तथा माता मरीने स्त्री हुवे। स्त्री मरीनें माता हुवे। वाप मरीने वेटो हुवे वेटो मरीने बाप हुवे। ईम संसार में जेतला जीव छे। तेतलासुं अनंत अनंतवार संवंध पाम्यो। ईम मनमें चिंतवे ते संसार भावना ते किण भाई शालिभद्रजी। ४४ एकत्व भावना किणने क० जीव तुं एकलो आयो ने एकलो ही परभव में जासी कोई थारे साथ माता पितादिक धन दोलत प्रमुख आवे नहीं ईम मनमें चिंतवे ते एकत्व भावना किणने भाई नमिराय ऋषीश्वरजीने। ४५ अन्यत्वभावना ते कि० जीवतुं देहसुं न्यारो छे तुं चेतना सहित छे, अमूर्ति छे, अविनाशी छे ने शरीर पुद्गल छे। अमूर्ति छे। ईम मनमें चिंतवे ते अन्यत्वभावना ते किणने भाई मृगापुत्रजी। ४६ अशुचि भावना ते किणने कहिजे जीव तुं तो निर्मलो छे शुद्ध पवित्र छे ने देह तो अशुचिमय महा अपवित्र छे। दशद्वार सदा वहेछे। मलमूत्र सुं भरी छे। नसांकी जाल छे। हाडकी कोथली छे। लोहीनी खाण छे। रोगनी खाण छे। महा अशुचि मय छे। चामडी न होवे तो माखियां भमवोही करे। मुवा पछे सडजाय गलजाय कीडा पडे, हिवे एहवो स्वरूप मनमें चिंतवे ते अशुचि भावना ते किण भाई सनंत कुमारजी। ४७ आश्रवभावना ते

किणने क० मिथ्यात्व अविरति, कषाय, जोग, राग, द्वेष मोहथी पाप रूपीया नाला आवे छे रूमय २ ते संवर रूपीया पाटीया करने रोके नहीं ते आश्रव भावना किणने भाई हरिकेशीजी । ४८ सम्वर भावना किणने क० आवता पापने व्रतपच्चखाण करने रोके ते सम्वर भावना ते किणने भाई समुद्रपालजी । ४९ निर्जरा भावना ते कि० तेना दोय भेद समकित सहित बारे भेदे तपश्चर्या करे ते सकाम निर्जरा कहीजे । समकित विना भूख, तृषा, छेदन भेदन शीत, उष्ण करीने सहे ते अकाम निर्जरा कहीजे ईम चिंतवे ते निर्जरा भावना ते किण भाई । अर्जुनमाली । ५० लोक स्वरूप भावना ते कि० तिन लोकनो स्वरूप मनमें चिंतवे ते किम चिंतवे ते कहेछे । उंचालोक, त्रीछो लोक, पाताल लोक एहनो स्वरूप चिंतवे हे जीव ये लोकमें तुं अनंतीवार भम्यो तथा जन्म मरण अनंतीवार कियां । ज्ञान, दर्शन, चारित्र विण तुं अनंती वार लोकमें भटक्यो ईम चिंतवे ते लोक भावना कहीजे ते किण भाई संयति राजर्षि । ५१ बोध भावना ते कि० हे जीव ज्ञान बोध केवली नो कह्या नहीं पाम्यां । कुज्ञान तो अनंती वार पाम्यो पण सुज्ञान जिन वाणी सुणी तथा मन में धारी नहीं ईम चिंतवे वली ईम चिंतवे हे जीव अव तुं मनुष्य जन्म पायो छे वार २ मनुष्य जन्म नहीं पावणो छे ते पाम्यो । आर्य क्षेत्र पाम्यो छे पांच इन्द्रिय पुरी पाम्यां छे तेथी केवली परूप्यो बोध बीज तेहने विषे उद्यम करे तथा सर्व सुख पामे ईम मन में चिंतवें ते बोध भावना कहीजे ते किण भाई । श्रीआदीश्वरजी ना ९८ बेटाने भाई । ५२ धर्म

भावना ते कि० हे जीव इण संसार में भमतां थकां श्री जैन धर्म शुद्ध आराध्यो नहीं । सम्यग्ज्ञान, दर्शन चारित्र धर्म नहीं आराध्या अज्ञानीना धर्म अनंती वार किया । तेथी संसार में रूल्यां पण केवली परूप्यो धर्म नहीं सरध्यो ते श्रद्धालु आत्मानी गरज सरे इम मन में चिन्तवे ते धर्म भावना कहीजे ते किण भाई ? धर्म रूचि मुनिराय । इति १२ भावना ।

सामायिक चारित्र ते कि० जठे जीवना परिणाम समता भाव में रहे, शत्रु मित्र उपर समभाव रहे । खोटो ध्यान, खोटी लेश्या नहीं चिंतवे । धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान ध्यावे एकांत दयारूपी परिणाम रहे ते सामायिक चारित्र कहीजे । ५४ छेदोपस्थापनीय चारित्र ते किणने कहीजे । पहले पांच महाव्रत धारण कीनो छे । वली जघन्य तो सातमें दिन, मध्यम चोथे महिने उत्कृष्ट छठे महिने बडी दीक्षा दे तथा साधुपणानी खंडत हुवे ते पछो धारे ते छेदोपस्थापनीय चारित्र । ५५ परिहार विशुद्ध चारित्र कि० । नव जणा समुदाय छोडीने वन में जाय ने तपश्चर्या करे जघन्य तो उपवास, मध्यम वेलो, उत्कृष्ट तेलो करे तथा जघन्य वेलो, मध्यम तेलो, उत्कृष्ट चोलो इण विध च्यार जणा छ मास तांई तपस्या करे ने ४ जणा वैयावच्च करे, एक जण वखाण वाणी करे । इमं छ महिना हुया पछे वैयावच्चवाला तो तपस्या करे ने तपस्या वाला वैयावच्च करे । वखाण वाला वखाणहीज करे छ महिना तांई करे ने वली वखाणना करणहार तो तपस्या करे छ महिना तांई सात जणा तो वैयावच्च करे ने एक वखाण

करे । इम अठारे महिना ताँई पीछे विध कही तिण मुजब तपस्या करीने समुदाय में आवे ते परिहार विशुद्ध चारित्र कहीजे । ५६ सूक्ष्म संपराय चारित्र ते कि० दसमे गुणठाणे चढे सूक्ष्म मात्र लोभ बाकी रहे आहारादिकनो तथा मोक्षनो लोभ करे ते सूक्ष्म संपराय चारित्र कहीजे । ५७ जथाख्यात चारित्र कि० जिहां आपणा निजस्वरूप को चिंतवणो छोडे नहीं, परस्वरूप में जीवना परिणाम कदापि बांधे नहीं, वीतराग दशा होय तथा केवल जिस्यो पाले ने घणी स्थिरता होय ते जथाख्यात चारित्र कहिजे । ५ समिति, ३ गुप्ति, २२ परिसह, १० यतिधर्म, १२ भावना, ५ चारित्र एवं सर्व मिली ५७ भेद संवरना हुआ । इति संवर तत्त्व समत्तं ।

॥ ७ निर्जरा तत्त्व ॥

निर्जरा तत्त्व कोने कहिजे । जीव रूपीयो कपडो कर्म रूपीयो मेल संयम रूपीयो साबु ज्ञान रूपीयो पाणी ज्यों कपड़े को उजला करे त्यों बारा प्रकारं तपस्या करके जीवने निर्मलो करे तीने निर्जरा तत्त्व कहीजे निर्जरा का जघन्य १२ भेद १ अणशण २ उणोदरी ३ भिक्षाचरी ४ रसपरित्याग ५ कायक्लेश ६ पडिसंलिणया ७ प्रायश्चित ८ विनय ९ वैयावच्च १० सज्झाय ११ ध्यान १२ काउसग्ग उत्कृष्ट भेद ३५४ । मूल भेद १२ उपर लिख्या अब उत्तर भेद सरू ।

१ अणशण का २० भेद । मूल भेद २ ईतरया ने आवं ईतरयाना १४ भेद १ चोथभत्तया २ छठभत्तया

३ अट्ठभत्तया, ४ दसभत्तया, ५ दुवालसभत्तया, ६ चौदाभत्तया, ७ सोलाभत्तयाँ, ८ अद्धमासिया, ९ मासिया, १० दूमासिया ११ तिमासिया, १२ चोमासिया, १३ पंचमासिया १४ छमासिया । आयना ६ भेद ईंगित मरण, पादोपगमन मरण भत्तपच्चखाण मरण, तिन निहारी, तिन अनहारी, निहारी तो गांम में रहे । अनहारी गांव वहार रहे ।

२ उणोदरी का १६ भेद मूलभेद २ आहार उणोदरी उपधि उणोदरी। आहार उणोदरी के ५ भेद। ८ कवल प्रमाणे अहार करे ते अल्प आहार कहिये । बार कवल प्रमाणे आहार करे तो आधी उणी उणोदरी १६ केवल प्रमाण आहार करे । आधी उणोदरी २४ कवल प्रमाणे आहार करे । पोणउणोदरी ३१ कवल प्रमाणे आहार करे किंचित मात्र उणोदरी एवं ५ । पुरुषकां ३२ स्त्रीका २८ नपुंसकका २४ में कवल करे सो उणोदरी । उपधि उणोदरी ना त्रण भेद । एक वस्त्र १ एकपात्र २ जीर्णउपधि एवं ८ भेद द्रव्य नां भाव उणोदरी का ६ भेद १ अप्पकोहे—अल्पक्रोध २ अप्पमाणे थोड़ोमान ३ अप्पमायाए थोड़ी माया ४ अप्प लोहे- थोड़ो लोभ ५ अप्प सद्दे थोड़ा बोले ६ अप्प झंझं । एवं सर्व मिली १४ भेद।

३ भिखारिया का ३० भेद । १ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव ५ उखतचरिया ६ निखतचरिया ७ उखतनिखत चरिया ८ निखत उखतचरिया ९ वट्टिजमाणे चरिया १० साहरिजमाणे चरिया ११ उपणीय चरिया १२ आवणीये चरिया १३ उपणीये आवणीये चरिया १४ आपणीये उपणीये चरिया १५ संसठ चरिया १६ असंसठ चरिया १७ तजायचरिये १८ अनाये चरिये १९ मोणचरिये २० भिक्ख लाये २१ अभिखलाये २२ दिठलाये २३ अदिठ लाये २४ पुठलाये २५ अपुठलाये २६ अनगिलाये २७ उव-

णीहिये २८ परमति पडिवाये २६ सुद्धेसणा ३० संखादिति।

४ रसपरित्यागना ६ भेद १ निवितिये २ पणिवरस परिचाये ३ आयविले ४ आयामसिथ भोई ५ अरस आहारे ६ विरस आहारे ७ अंत आहारे ८ प्रांत आहारे ६ लुख आहारे।

५ कायाक्लेशना १३ भेद १ ऊभो काउसग्ग करे २ बेठो ध्यान धरे ३ लकडासण करे ४ दंडासण करे ५ वीरासण करे ६ पालठी आसन करे ७ थुंक थुंके नहीं ८ मेल उतारे नहीं ६ खाज खिणे नहीं १०. सूर्यनी आतापना ले ११ शीतनी आतापना लेवे १२ शरीरनी सुश्रुषा न करे १३ लोचादिक तप करे।

६ पडिसंलेहणा का १३ भेद मूलभेद ४। १ इंद्रिय पडिसंलेहणाया २ कषाय पडिसंलेहण। ३ जोग पडिसंलेहणया ४ विवनसयणासण पडिसंलेहणा इन्द्रिय पडिसंलेहणया का ५ भेद १ श्रोतेन्द्रिय २ चक्षु-इन्द्रिय ३ घ्राणेन्द्रिय ४ रसेन्द्रिय ५ स्पर्शेन्द्रिय कषाय पडिसंलेहणया का ४ भेद १ क्रोध २ मान ३ माया ४ लोभ निष्फल करे जोग पडिसंलेहणया का ३ भेद १ मन जोग २ वचन जोग ३ काय जोग रूडा प्रवर्तावे वितत सयणासण ते स्त्री पुरुष पंडग रहित स्थानक सेवे।

७ प्रायश्चित का ५० भेद १० प्रकार दोष लगावे १ काम के वश २ प्रमाद के वश ३ अजाणतां ४ रोग के वश ५ आपदा को पीडयो ६ स्वपक्ष परपक्ष का व्याकुलता से ७ सहस्मात कारी विचारयो ८ द्वेष के वश ६ भय के वश १० भरम के वश दस प्रकारे आज्ञावतो दोष लगावे १ कंपतो कंपतो आलोवे तो दोष लगावें २ उनमान पुछने आलोवे तो दो० ३ दीठो दीठो आलावे तो दोष लागे ४सक्ष्म

२ आलोवे मोटो आलोवे नहीं ते दोष लागे । ५ मोटो आलोवे सूक्ष्म आलोवे ते दोष लागे ६ हलवे हलवे आलावे ते दोष लागे ७ उतावलो २ आलोवे ते दोष लागे ८ घणा कने आलावे तो दोष लागे ९ अजाण कने आलावे तो दोष लागे १० प्रागच्छितया कने आलावे तो दोष लागे । दश प्रकार का धणी कने आलोवे १ आचारवंत २ हिया में धार राखे जिणा कने ३ पांच व्यवहार का धणी कने आलोवे ४ लज्जा छुडावे जिणा कने ५ प्रायश्चित दिया शुद्ध निर्वाह जिणा कने ६ ओरा कने चरचे नहीं जिणा कने ७ खंड खंड करने प्रायश्चित देवे जिणाकने ८ इहलोकनो भय दिखावें जिणाकने ९ परलोक का भय दिखावे जिणाकने १० प्रिय धर्मी दृढ धर्मी होवे जिणाकने आलोवे दश प्रकार को धणी हुवे जिको आलोवे १ जातिवंत २ कुलवंत ३ विनयवंत ४ ज्ञानवंत ५ दर्शनवंत ६ चारित्रवंत ७ क्षमावंत ८ इन्द्रियांने दमणहार ९ माया रहित १० आलोय ने पश्चाताप न करे जिको आलोवे १० प्रकार के प्राय श्चित १ आलोयणा जिको प्रायश्चित २ मिच्छामि दुक्कडं ३ दोनुभेला ४ अशुद्ध वस्तु परठने ५ काउसग्ग करे ६ तप करे ७ छेद देवे ८ मूलसुं दीक्षा देवे ९ छ महिना ताईं बेले बेले पारणो करायने दीक्षा देवे ६ विनय का १३४ भेद कहे छे मूल भेद सात १ ज्ञान विनय २ दर्शन ३ चारित्र ४ मन ५ वचन ६ काया ७ लोकोपचार विनय । ज्ञान विनय का ५ भेद मति, श्रुत, अवधि, मनः पर्यव, केवल, दर्शन विनयना ५५ भेद ते कहे छे मूल भेद दो १ सुसुसणया २ अणासायणा । सुसणयाना १० भेद कहे छे । १ गुरु आयां उठी उभो हुए २ गुरू आयां आसण आमंत्रे ३ गुरूआयां आसण बिछावे ४ सत्कार देवे ५ सन्मान देवे ६ हाथ जोडे ७ वंदणा करे ८ गुरु उभारहे जठे लग उभो रहे ९ आवतां सन्मुख जावे

१०. भगवान पहुचाव । अणासायणाना ४५ भेद । १ अरिहंतजीनो विनय २ अरिहंत परूप्या धर्मनी ३ आचारजनी ४ उपाध्यायजीनी ५ थेवरनी ६ कुलनी ७ गणनी ८ संघनी ९ संभोगिनी १० किरिया-वंतनी आशातना टाले ११ मति ज्ञानवंत १२ श्रुतज्ञानवंत १३ अवधि ज्ञानवंत १४ मनःपर्यव ज्ञानवंत १५ केवल ज्ञानवंतनी अशातना टाले जुमले १५ नो विनय करे १५नी भक्ति करे १५ ना गुण ग्राम करे जुमले ४५ हुआ । चारित्र विनयना ५ भेद ते कहे छे १ सामायिक चारित्र २ छेदोपस्थापनीय चारित्र ३ परिहार विशुद्ध चारित्र ४ सूक्ष्म संपराय चारित्र ५ जथाख्यात चारित्र मन विनय २४ भेद मूल भेद दो १ अपमथ मनविनय २ पसथ मनविनय अपसथना १२ भेद १ सावजे २ सकिरिये ३ ककसे ४ कडुवे ५ निठुरे ६ सफरसे ७ आसवकरे ८ छेदकरे ९ भेदकरे १० परिथावण करे ११ भूओवघाए १२ उपद्दव करे पस्सथ विनयना १२ भेद १ असावजे २ अकिरिये ३ अककसे ४ अकडुए ५ अनिठुरे ६ अफरसे ७ अणासवकरे ८ अछेदकरे ९ अभेद करे १० अपरियावण करे ११ अनुपद्दव करे १२ अनुवघाए एवं २४ थया एम २४ वचन विनयना । काय विनयना १४ भेद मूलभेद दो १ अप्रशस्त काय विनय २ प्रशस्त काय अप्रशस्तना ७ भेद १ अणाउतंगमणं २ अणाउतं ठाणं ३ अणाउतं निसनं ४ अणाउतंतूयटणं ५ अणाउतं उलंघणं ६ अणाउतं पलंघणं ७ अणाउतं संवंधी काय जोग भूंभणया । प्रशस्तकायना ७ भेद कहे छे १ आउतंगमणं २ आउतंठाणं ३ आउतंनिसनं ४ आउतंतूयटणं ५ आउतं उलंघणं ६ आउतं पलंघणं ७ आउतं संवंधी काय जोग भूंभणया एवं १४ हुआ लोकोपचार विनयना ७ भेद १ अभ्भसवतीया २ परछंदाणवत्तीया ३ कज्जहेउ ४ कयपकीरिये ५ देशकालुणया ६ अतिगवेस-

गाथा ७ सबथे सुपडिलोमया सरवाले ७। ५। ५५। ५। २४। २४। १४। सर्व मिलीने विनयना १३४ भेद हुवा।

९ वैयावचना १० भेद १ आचार्यनी उपाध्यायनी ३ थेवरनी ४ तपस्विनी ५ गिलाणनी ६ शिष्यनी ७ कुलनी ८ गणनी ९ संघनी १० साधर्मीनी।

१० सझायना ५ भेद १ वायणा २ पूछणा ३ परियट्टणा, ४ अणुपेहा ५ धर्मकथा।

११ ध्यान का भेद ४८ मूल भेद ४ आर्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान शुक्लध्यान आर्तध्यान का ८ भेदः-४पाया ४ लक्षण पाया चार कहे छे १ अमनुनसंपउग संपउते तसाविपउगसई समना गया विभवई ते अच्छी ते माठी वस्तुनो विजोग चिंतवे २ मणुन संपउग संपउत्ते तमविपउगसई समनागया विभवई ते रोगादिकनो वियोग वस्तु का संयोग चिंतवे ३ आयंक संपउत्ते तसविप्पउगसई समना गया विभवई ते परभवरा सुखरो चाहे ४ परभूसीय कामभोग संपसंउगसंपउते तस्स विप्पउगसई समना गया विभवई ते तिप्पणया ते नियाणो करे ४ लक्षण चारः-१ कंदणया ते आक्रंद करे २ सोयणयाते सोच करे ३ तिप्पणया ते आंसुनांखे ४ परिदेवणया ते विलापातनो करवो।

रूद्रध्यान का ८ भेद पाया ४ लक्षण ४ कहेछे १ हिंसानुबंधी तेहिंसा करीने राजी २ होवे मोसाणु बंधी ते झूठ बोलीने राजी होवे ३ तेणाणुबंधी ते चोरी करीने राजी होवे ४ सारखाणुबंधी ते आगलाने बंधी ने नांखी राजी होवे लक्षण चार छे १ उसन्न दोस ते थोडो व तरो द्वेषपणो राखे २ बहुलदोसे

ते थोड़ी वातरो खेद घणो राखे ३ अनाण दांसे अज्ञानरे वश द्वेष घणो राखे ४ अमरणांत दोषे ते मरे जठातांई द्वेष छोडे नहीं।

धर्मध्यान का १६ भेद ४ पाया ४ लक्षण ४ आलंबन ४ अणुप्पेहा ४ पाया कहेछे १ आणाविजय ते वीतरागनी आज्ञाचिंतवे २ अवायविजये ते कर्म आवणना ठिकाणाचिंतवे ३ विपागविजये ते कर्मना विपाक चिंतवे ४ संठाण विजये ते १४ राजलोकना स्वरूपचिंतवे ४ लक्षण कहेछे।

१ आणारूई ते आज्ञानी रूचि करे २ निसगरूई ते जातिस्मरणरा जोगसुं धर्मकी रूचिकरे ३ उपदेश रूई ते उपदेश सुणने धर्मनी रूचिकरे ४ सुत्र रूई ते सुत्र सुणने धर्मनी श्रद्धा करे च्यार आलंबन १ वायणा ते सूत्रनी वाचना देवे ने सीखे २ पडिपूछणा ते सिद्धांतना प्रश्न पुछे ३ परियट्टणा ते वार वार सूत्र गुणे ४ धर्मकथा ते वखाण वांचने सुणे च्यार अणुप्पेहा १ एगचाणुप्पेहा ते हे जीव तुं एकलो आयो एकलो जासी ईम चिंतवे २ अणीचाणुप्पेहा ते हे जीव सांसारिक पदार्थ सर्व अनित्य छे ईम चिंतवे ३ असरणाणुप्पेहा ते हे जीव धर्मविनातने कोई शरण नथी ४ संसाराणुप्पेहा ते सर्व जीव आपआपणा कर्मकरी परिभ्रमण करेछे।

शुक्ल ध्यान का १६ भेद ४ पाया ४ लक्षण ४ आलंबन ४ अणुपेहा। च्यार पाया १ पहुंतवितक अविहारी ते एक जीवने तथा आपणा स्वरूपने घणी जायगाचिंतवे। २ एगंत वितक अविहारी ते एक जीव स्वरूपने चिंतवे। ३ सुहुम किरीय अनिटी ते सूक्ष्म क्रियासु निवर्ते। ४ समुच्छिन्न क्रिया अपडवाई ते जोगादिक निरोधकरे। च्यार लक्षण। अवए ते भय संज्ञा जीते २ असंमोह ते देवतादिकना चरि

सुं मुरझावे नहीं ३ विवेग ते कर्मजाल सुं विवेग करे। २ विउसग्ग ते कर्मजालसुं न्यारा होवे। च्यार आलंवन। १ खंती ते क्षमाकरे। २ मुत्तिंत निर्लोभ हुवे ३ अजवेते सरल हुवे ४ मद्दवे ते कोमल हुवे च्यार अणुपेहा। १ अणिच्चाणुप्पेहा—संसार नो अन्यत्व पणो चिंतवे २ विपरिणामाणुप्पेहा ते पुद्गलनों अन्यत्वपणो चिंतवे ३ असुभाणुप्पेहा कर्मना विपाक अशुभ चिंतवे। अवयाणुपेहा ते जीव ने अखंडित चिंतवे एवं ध्यानना सर्व मिली ४८ भेद हुआ।

१२ विउसग्गना ८ भेद मूलभेद दो १ द्रव्य २ भाव द्रव्यना ४ भेद १ सरीर विउसग्ग २ उपधि विउसग्ग ३ गणविउसग्ग ४ भक्त पाणी विउसग्ग। भावना ४ भेद। १ कषायविउसग्ग २ कर्म विउसग्ग ३ जोगविउसग ४ संसारविउसग्ग। इति निर्जरातत्व सम्पूर्ण ॥

८ बंध तत्व।

बंधना ४ भेद। १ प्रकृत्ति बंध, २ स्थिति बंध, ३ अनुभाग बंध, ४ प्रदेश बंध। प्रकृति बंध आठ कर्म की १४८ प्रकृत्ति। ज्ञानावरणीय कर्म की ५ प्रकृति मतिज्ञानावरणीय इत्यादि। दर्शनावरणीय की ९ प्रकृति चक्षुदर्शनावरणीय, २ अचक्षुदर्शनावरणीय, ३ अवधि दर्शनावरणीय ४ केवल दर्शनावरणीय. तथा पांच निद्रा। ५ निद्रा ६ निद्रा निद्रा, ७ प्रचला, ८ प्रचला प्रचला, ९ थिणद्धि निद्रा एवं ९ भेद। वेदनीय कर्म की २ प्रकृति १ शाता, २ अशाता। मोहनीय कर्मनी अठावीश प्रकृति। १ अनंतानुबंधी क्रोध, २ मान ३ माया ४ लोभ, ५ अप्रत्याख्यानी क्रोध, ६ मान, ७ माया. ८ लोभ, ९ प्रत्याख्यानी क्रोध, १० मान

११ माया, १२ लोभ, १३ संजलनो क्रोध, १४ मान, १५ माया, १६ लोभ एवं १६ कषाय। तथा नवनो कषाय १७ हास्य, १८ रति, १९ अरति, २० भय, २१ शोक, २२ दुगंछा, २३ स्त्रीवेद, २४ पुरुष वेद, २५ नपुंसक वेद, एवं २५ चारित्र मोहनीय की प्रकृति तथा ३ दर्शन मोहनीय की प्रकृति कहे छे. २६ समकित मोहनीय, २७ मिथ्यात्व मोहनीय, २८ मिश्र मोहनीय। एवं २८ आउखो कर्म की ४ प्रकृति। नारकी नो आउखो, २ तिर्यंच को आउखो, ३ मनुष्य को आउखो, ४ देवता को आउखो। हिवे नाम कर्म की ९३ प्रकृति। गईनाम ते नरकादिक ४ गति, जाई नाम ते एकेन्द्रियादि ५ जाति, शरीर नाम ते उदारिक आदि ५ शरीर, बंधननाम ते उदारिक आदि ५ बंधन, संघातन नाम ते उदारिक आदि ५ संघातन, अंगोपांग नाम तिन अंगोपांग उदारिक १ वैक्रिय २ आहारक ३ संघयण नाम छे संघयण वज्र ऋषभनाराच आदि। संठाण समचोरस आदि छ संठाण। वर्णनाम ५ गंधनाम २। रसनाम ५ फरसनाम ८ एवं ५९। अगुरुलघुनाम ६० अपर्याप्त नाम ६१ पराघात नाम ६२ आनुपूर्वी नाम ४ आनुपूर्वी १ देवता की २ मनुष्य की ३ नारकी की ४ तिर्यंच का। एवं ६६ उसास नाम ६७ अताप नाम ६८ उद्योत नाम ६९ प्रशस्त वि० ७० अप्रशस्त विहायोगति ७१ त्रस नाम ७२ स्थावर नाम ७३ सूक्ष्म नाम ७४ बादर नाम ७५ पर्याप्ता नाम ७६ अपर्याप्ता नाम ७७ प्रत्येक नाम ७८ साधारण नाम ७९ स्थिर नाम ८० अस्थिर नाम ८१ शुभ नाम ८२ अशुभ नाम ८३ सौभाग्य नाम ८४ दौर्भाग्य नाम ८५ सुस्वर नाम ८६ दुस्वर नाम ८७ आदेय नाम ८८ अनादेय नाम ८९ जशोकीर्ति ९० अजशोकीर्ति ९१ तीर्थंकर नाम ९२ निर्माण नाम ९३ गोत्र कहतां २ ऊंच गोत्र १ नीचगोत्र २ अंतराय की ५ प्रकृति दानांतराय इत्यादि एवं १४८ प्रकृति बंध

स्थिति बंध, कर्मों क काल की स्थिति १ ज्ञानावरणीय २ दर्शनावरणीय ३ वेदनीय ४ अंतराय ये चारों की उत्कृष्टी स्थिति ३० कोडाकोडी सागर की अवाधा काल पडे तो ७ हजार वरस की मोहनीय कर्म की स्थिति ७० कोडाकोडी सागर अवाधा काल पडे तो ३ हजार वर्ष नाम कर्म व गोत्रकर्म की स्थिति २० कोडाकोडी सागर की अवाधा काल पडे तो दो हजार वर्ष की आउखा कर्म की स्थिति ३३ सागर की अवाधा काल नथी अनुभाग बंध कर्मों के रस ज्ञानावरणीय कर्म छ प्रकार बांधे १ ज्ञान पडिणियाए २ ज्ञान निन्हवणियाए ३ नाण अंतराएणं ४ नाणपउसेणं ५ नाण आसायणाए ६ नाणविसंवायणा जोगेणं। दस बोल कर भोगवे १ सोयावरणं २ सोय विन्नाणा वरणं ३ नेत्तावरणं ४ नेत्त विन्नाणावरणं ५ गंधा वरणं ६ गंध विन्नाणावरणं ७ रसा वरणं ८ रसाविन्नाणावरणं ९ फासा वरणं १० फास विनाणा वरणं। दर्शनावरणीय कर्म ६ बोल करी बांधे। दंसण पडिणियाए, २ दंसणानिन्हवणियाए ३ दंसण अंतराएणं ४ दंसण पउसेणं ५ दंसण आसायणाए, ६ दंसण विसंवायणा जोगेणं। दर्शनावरणीय कर्म ९ बोल कर भोगवे—नव प्रकृति कहणी। वेदनीय कर्म २२ बोल करी बांधे १ शाता वेदनीय १० बोल करीने बांधे। १ पाणाणु कंपयाए, २ भूयाणु कंपयाए, ३ जीवाणुकंपयाए, ४ सत्ताणु कं० ५ अदुक्खणयाए, ६ असोयणयाए, ७ अझूरणयाए, ८ अतिप्पणयाए, ९ अपिट्टणयाए १० अपरियावणयाए। बारा बोल करी अशाता वेदनीय बांधे पाणाणं, भूयाणं, जीवाणं, सत्ताणं दुःखणयाए १। सोयणयाए २ झूरणयाए ३। तिप्पणयाए ४। पिट्टणयाए ५। परियावणयाए ६। बहु दुःखणयाए ७। बहु सोयणयाए ८। बहुझूरणयाए ९। बहु तिप्पणयाए १०। बहु पिट्टणयाए ११। बहु परियावणयाए १२। वेदनीय कर्म १६ बोल करी

भ.गन्त आठ बोल करी शाता वेदनीय भोगवे। १ मणुन्ना सद्दा, २ मणुन्ना रूवा, ३ मणुन्ना गंधा, ४ मणुन्ना रसा, ५ मणुन्ना फासा, ६ मण सुहइत्ता, ७ वय सुहइत्ता, ८ काय सुहइत्ता, आठ बोलकरी अशाता वेदनीय भोगवे। १ अमणुन्ना सद्दा, २ अमणुन्ना रूवा, ३ अमणुन्ना गंधा, ४ अमणुन्ना रसा, ५ अमणुन्ना फासा, मणदुहइत्ता, ७ वयदुहइत्ता, ८ कायदुहइत्ता। मोहनीय ६ बोल करी बांधे। १ तिव्र कोहे, २ तिव्रमाणे ३ तिव्रमायाए, ४ तिव्र लोहे ५ तिव्रदंसण मोहणीझे, ६ तिव्र चारित मोहणीझे। मोहनीय कर्म पांच बोल करी भोगवे। १ समकित वेदनी, २ मिथ्यात्ववेदनी, ३ समामिथ्यात्व वेदनी, ४ कषायवेदनी, ५ नोकषाय वेदनी। आउखा कर्म १६ बोल बांधे। च्यारबोल करी नारकीनो आउखो बांधे। १ महा आरंभयाए, २ महापरिग्गहियाए, ३ कुणमहारेणं, ४ पंचेंदियवहेणं। च्यार बोल करि तिर्यंच नो आउखो बांधे। १ माईल्लयाए, २ निवडमायलियाए, ३ अलियवयणेणं, ४ कुडतोले कुडमाणे। ४ बोलकरी मनुष्यनो आउखो बांधे। १ पगई भद्दयाए, २ पगई विणयाए, ३ साणुकोसयाए, ४ अमच्छरीयाए। चार बोलकरी देवतानो आउखो बांधे। १ सराग संजमेणं, २ संजमासजमेण, ३ बालतवो कम्मेणं, ४ अकाम निज्जराए। आउखा ४ प्रकारे भोगवे। १ नारकीनो आउखो, २ तिर्यंचनो आउखो, ३ मनुष्यनो आउखो, ४ देवतानो आउखो। नामकर्म ८ बोल करी बांधे। च्यार बोल उंचा नाम बांधे १ कायुज्जुयाए २ भावुज्जुयाए, ३ भासाउज्जुयाए, ४ अविसंवायणा जोगेणं। चारबोलकरी नीच नामबांधे। १ नोकायुज्जुयाए २ नोभावुज्जुयाए, ३ नोभासुज्जुयाए, ४ विसंवायणा जोगेणं। नामकर्म २८ प्रकारे भोगवे १४ बोलकरी शुभनाम कर्म भोगवे। १ इट्ठासद्दा, २ इट्ठारूवा, ६ इट्ठा गंधा, ४ इट्ठारसा, ५ इट्ठाफासा,

६ इट्ठगई, ७ इट्ठाठिई, ८ इट्ठालावणे, ९ इट्ठाजसोकीर्ति, १० इट्ठउठाणकम्म बलवीर्य पुरिसाकार परक्कम्म ११ ईठसरया, १२ कंतसरया, १३ पियसरया, १४ मणुन्न सरया। १४ बोल करी अशुभनाम भोगवे १ अणीट्ठा सद्दा, २ अणीट्ठारूवा, ३ अणीट्ठा गंधा, ४ अणीट्ठा रसा ५ अणीट्ठा फासा, ६ अणीट्ठागई, अणीट्ठाठिइ, ८ अणीट्ठा लावणे, ९ अणीट्ठा जशोकीर्ति १० अणीठे उट्ठाण कम्म, बल, वीर्य, पुरिसाकार परक्कमे, ११ दीण सरया, १२ हीण सरया, १३ अकंतसरया, १४ अणुमन्न सरया। गोत्र कर्म १६ बोले करी बांधे। आठ बोल करी उंच गोत्र बांधे १ जाई अमएणं, २ कुल अमएणं, ३ बल अमएणं, ४ रूव अमएणं, ५ तव अमएणं, ६ सुत्त अमएणं, ७ लाभ अमएणं, ८ ईसरीय अमएणं, । आठ बोल करी नीच गोत्र बांधे जाई मएणं इत्यादि ८। गोत्र कर्म सोले बोलकरी भोगवे ८ बोलकरी उंचगोत्र भोगवे। १ जाई विसिट्ठियाए, जाव इसरीय विसिट्ठियाए। आठ बोलकरी नीच गोत्र भोगवे जाई विहीणयाए जाव इसरीय विहीणयाए। अंतराय कर्म ५ बोले करी बांधे दानांतराएणं जाव वीर्यांतराएणं ५। पांचहीज बोले करी भोगवे दानांतराय इत्यादि। प्रदेश बंध कर्म दल का संचा। इति बंध तत्त्व सम्पूर्ण।

९ मोक्ष तत्त्व।

मोक्ष का नव द्वार। १ छता पदनी परूपणा, २ द्रव्य परिमाण, ३ क्षेत्र परिमाण, ४ स्पर्शना परिमाण, ५ काल, ६ अंतर, ७ भाग, ८ भाव, अल्पबहुत्वद्वार। सत्पदपरूपणा द्वार ते मोक्ष छता छे, ते मोक्ष जीव जाय दस द्वार करी शाश्वती छे, सतद्वार चार गति मांहि मनुष्य गति सुं मोक्ष छे तिन गतिसुं नथीं २ ईन्द्रियद्वार पंचेन्द्रिय सुं मोक्ष छे च्यार ने नथी ३ काय द्वार छकाय मांही त्रस कायने मोक्ष छे. पांचने

नथी ४ भवद्वार भव्य जीव मोक्ष जावे अभव्य मोक्ष न जावे ५ सन्नी द्वार संज्ञी मोक्ष जाये असंज्ञी मोक्ष न जाय, चारित्र द्वार पांच चारित्र में सुं जथाख्यात चारित्र सुं मोक्ष छे शेप च्यार सुं नथी ७ सम्यक्त्व द्वार समकित ५। १ उपशम, २ सास्वादान, ३ क्षयोपशम, ४ वेदक ५ क्षायक पांच मांहि क्षायक समकित से मोक्ष छे च्यार से नथी। आहार द्वार अणाहारिक मोक्ष जाय आहारक न जाय। ६ ज्ञान द्वार पांच ज्ञान मांही केवल ज्ञाननें मोक्ष छे च्यार सुं नथी। १० दर्शन द्वार चार दर्शन मांहे केवल दर्शन से मोक्ष छे तिनसुं नथी। ए १० बोल करी सिद्ध शाश्वता हैं द्रव्य द्वार सिद्ध अनंता हैं २ क्षेत्र द्वार लोकाकाश ने असंख्यात में भाग सर्व सिद्ध रहे छे ४ स्पर्शना द्वार लोकनो अग्रभाग फरसी ने रह्या छे ५ काल द्वार एक सिद्ध आश्री आदि छे पण अंत नहीं सर्व सिद्ध आश्री आदि नहीं अंत नहीं ६ अंतर द्वार सिद्धा के मांहोमांही आंतरो कोई नही छे सर्व सिद्ध सरीखा छे एक सिद्ध तिहां अनंता सिद्ध रहे छे ए ६ हवे सातमा भागद्वार कहीए छे सिद्ध केतला भागे छे सर्वही जीव संसार में छे तेहने अनंत में भागे सिद्ध छे ते सिद्धा थकी पृथ्वी आदि देइने सर्वही जीव अनंत गुण छे हिवे आठमो भावद्वार कहे छे पांच भाव छे ते मांहि क्षायक भाव तथा पारिणामिक भाव वर्ते छे पारिणामिक ते लोक मांहे भव्य ते भव्यहीज रहे पिण अभव्य नहीं होय अभव्य ते अभव्यहीज रहे पिण भव्य नहीं होय जीव ते अजीव नहीं होय एहवो पारिणामिक भाव ते सिद्ध पणा जाणवो हिवे नवमो अल्प बहुत्वद्वार कहे छे थोडा ते कुण सर्वसुं थोडा नपुंसक सिद्ध तेहथी स्त्री संख्यात गुणा अधिकी तेहथी पुरुष संख्यात गुणा अधिक सिद्ध होवे इति श्री मोक्ष तत्त्व समत्तं ॥

इति श्री न[illegible] [illegible]र्थ विस्ता सहित समाप्तं ।